सत्यमेव जयते

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

तेलंगाना, हैदराबाद

कलिका 53वाँ अँक

हिन्दी पत्रिका

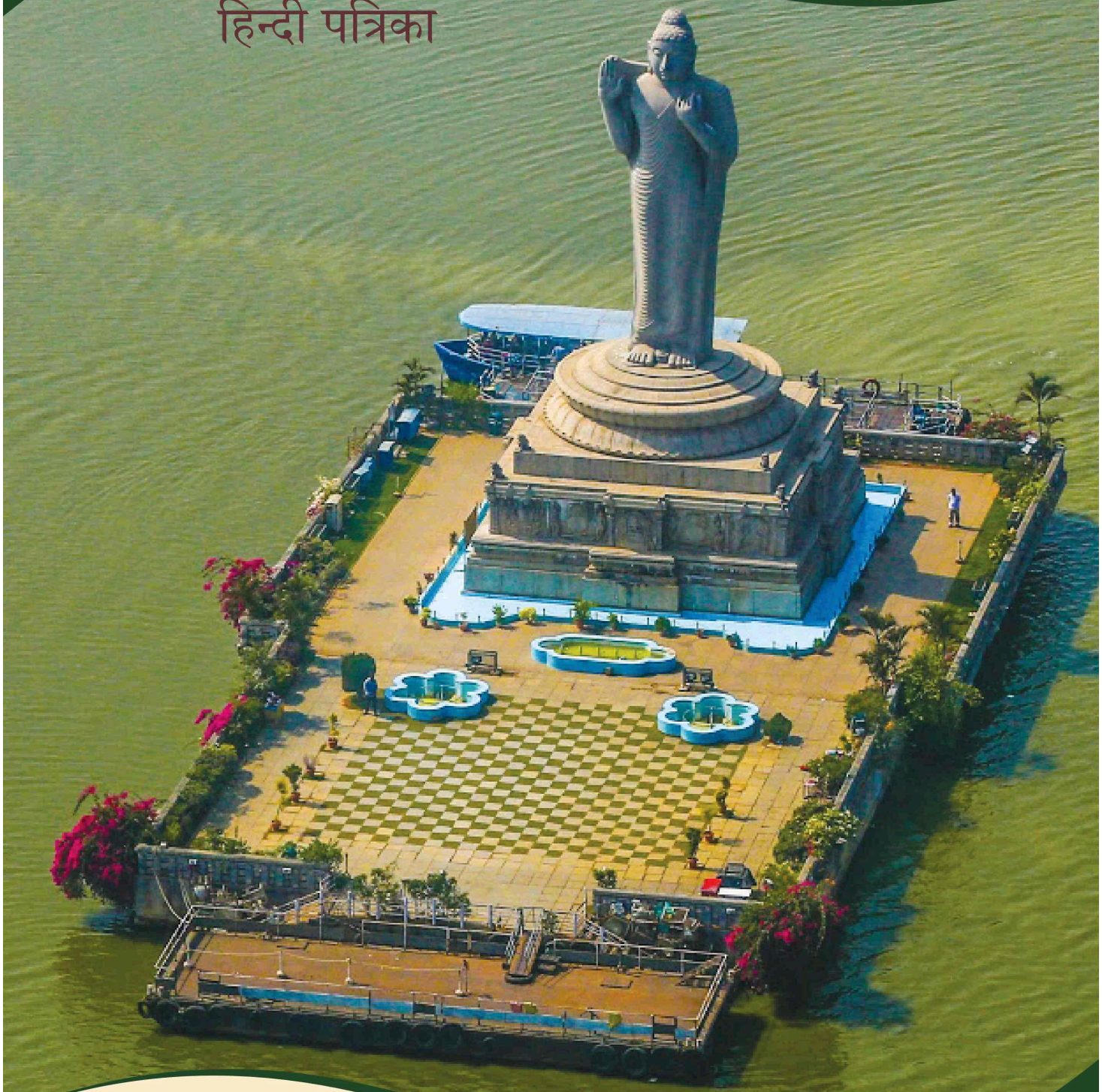

कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं ह.) तेलंगाना, हैदराबाद;
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तेलंगाना, हैदराबाद;
कार्यालय महानिदेशक केन्द्रीय (लेखापरीक्षा) हैदराबाद;
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) आंध्र प्रदेश, हैदराबाद;

हुसैन सागर, हैदराबाद का इतिहास
(मुख्य पृष्ठ चित्र)

एक शांत झील के दिव्य दृश्य के मध्य में भगवान बुद्ध की एक मंगल मूर्ति खड़ी है! यह सिर्फ एक कल्पना नहीं है बल्कि एक वास्तविक स्थान है। यह शानदार स्थान हैदराबाद में हुसैन सागर झील है। वर्ष 1562 में हुसैन शाह वाही द्वारा निर्मित यह झील, भारत की कुछ मानव निर्मित झीलों में से एक है। यह झील, हैदराबाद और सिकंदराबाद के बीच में एक कड़ी के रूप में कार्य करती है। शहर के लिए पर्याप्त पानी की आपूर्ति करने के लिए इस झील का निर्माण मूसी नदी की सहायक नदी से कराया गया था। आज यह झील हैदराबाद में सबसे अधिक देखे जाने वाले शानदार पर्यटन स्थलों में से एक है।

एक संगीतमय फव्वारा लुम्बिनी पार्क की सुंदरता को और बढ़ा देता है, जो झील को एक तरफ से घेरे हुए है। झील के दूसरी तरफ एक विशालकाय बिरला मन्दिर है, जिसमें एक नक्काशीदार मूर्ति है। इसमें प्रवेश के लिए एक सफेद मेहराब चिह्नित किया गया है, जहाँ खंभों के पास हर तरफ दो शेर खड़े हैं, जो पारंपरिक हिंदू मंदिर डिजाइन को दर्शाते हैं। भगवान बुद्ध की अखंड प्रतिमा ग्रेनाइट से बनी है। यह प्रतिमा 16 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। रात के समय झील की रूपरेखा की रोशनी की शानदार पंक्ति "हीरे से गढ़े हुए हार" की तरह दिखाई देती है। आप टैंक बंड सड़क से इस सुंदर दृश्य को देख सकते हैं, जहाँ अच्छी तरह से फुट-पाथ बने है और बेंच रखी हैं।

टैंक बंड रोड के निकट एक अन्य मुख्य मार्ग है, जो नेकलस रोड के रूप में लोकप्रिय है। इस सड़क के दोनों तरफ सुंदर उद्यान होने से शाम के समय में अक्सर आगंतुकों की बहुत भीड़ देखी जाती है। हुसैन सागर झील आगंतुकों के मनोरंजन के लिए कई गतिविधियों का केंद्र भी है। यहाँ के प्रमुख आकर्षणों में लुम्बिनी पार्क में बुद्ध की प्रतिमा, जहाज पर भोजन की सुविधा, स्पीड बोट पर परिभ्रमण और निवास सांस्कृतिक विभागों द्वारा उपयोग की जाने वाली सांस्कृतिक गतिविधियाँ शामिल हैं।

पर्यटकों का प्रमुख आकर्षण स्थल होने के कारण इस झील की बिगड़ती हालत निश्चित रूप से ध्यान देने के योग्य है। फिलहाल, इस स्थान का माहौल दिखने में अति मनमोहक और शीतलता प्रदान करने वाला है।

पता: हैदराबाद केंद्र से 2 किमी की दूरी पर, हैदराबाद, तेलंगाना, भारत

जाने के लिए: नावों के माध्यम से बुद्ध प्रतिमा और लुम्बिनी पार्क में पहुँचा जा सकता है।

प्रवेश शुल्क: वयस्कों के लिए नौकाविहार शुल्क: 30 रुपये और बच्चों के लिए नौकाविहार शुल्क: 20 रुपये।

स्पीड बोट: चार व्यक्तियों के लिए 160 रुपये

वॉटर स्कूटर: 60 रुपये प्रति यात्रा

समय: सप्ताह के सभी दिन सुबह 8:00 बजे से लेकर रात 10:00 बजे तक

सुझाव:

झील पर जाने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च महीने का है।

एक गिलास नींबू पानी सिर्फ 10 रूपये में लेकर झील के चारों ओर शांतिपूर्वक टहला जा सकता है।

एक रोमांचक अनुभव के लिए मोटर बोट की सवारी करें।

कुछ खाने-पीने का सामान भी अपने साथ जरूर ले जाएं ।

पार्क में सवारी और लेजर शो का आनंद भी लिया जा सकता है।

★ ★ ★

वार्षिक पत्रिका
कलिका पत्रिका परिवार (53वाँ अँक)

संरक्षक मंडल:

श्री जे. एस. करपे, महानिदेशक केन्द्रीय (लेखापरीक्षा) हैदराबाद,
श्री अनिन्दा दासगुप्ता, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) तेलंगाना, हैदराबाद,
श्रीमती सुधा राजन, महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तेलंगाना, हैदराबाद,

परामर्श मंडल:

श्री संतोष वी. डावरे, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन),
श्री आर. वी. के. साई गाँधी, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन),
श्री आदित्य भोजगडिया, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन),
श्री सज्जन कुमार, उप निदेशक (प्रशासन),
श्री अखिल एस. कुमार, उप महालेखाकार (लेखा)
श्रीमती लाजवंती ठाकोर, वरिष्ठ लेखाधिकारी (राजभाषा)

प्रधान संपादक:

श्री वजीर सिंह, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

संपादन सहयोग:

श्री संजीव कुमार, स.ले.अ.
श्रीमती ज्योति दीक्षित, व. हि. अ.
श्री सागर शर्मा, क.हि.अ.
श्री संतोष, क.हि.अ.
श्री सोमबीर, डी.ई.ओ. ग्रेड "बी"
पत्रिका के सभी रचनाकार

विशेष: पत्रिका में प्रकाशित विचार रचनाकारों के हैं उनसे कार्यालय और संरक्षक मंडल, परामर्श मंडल, प्रधान संपादक या सम्पादन सहयोग मंडल के सदस्यों का सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी वाद-विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र हैदराबाद, तेलंगाना होगा।

★ ★ ★

अनुक्रमणिका

I. आदरणीय गृह मंत्री जी का संदेश

ii. महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का संदेश

iii. महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) तेलंगाना का संदेश

iv. महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तेलंगाना का संदेश

v. वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तेलंगाना का संदेश

vi. वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) तेलंगाना का संदेश

vii. वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) आंध्र प्रदेश का संदेश

viii. उप निदेशक (प्रशासन एवं प्र. कर), कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का संदेश

ix. संपादकीय लेख

क्र. सं.	रचना	रचनाकार (श्री/श्रीमती/कु.)	पृष्ठ सं.
1	'माँ'	कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव 'पंकज'	
2	“मैं नहीं मरूँगा”	स्व. श्री प्रदीप कुमार महेन्दा	
3	विज्ञान और धर्म	धवल किशोर सिंह	
4	जानना चाहती हूँ	रितु सिंह	
5	शिक्षा का महत्व	महाराज गुप्ता	
6	“उसके” लिए	वजीर सिंह	
7	मैं कौन हूँ	एम. कोदंडराम	
8	हिन्दी हैं हम और हिन्दी भाषा	विनय कुमार	
	कार्यालय में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा और अन्य कार्यक्रमों की झलकियाँ		
9	जीने की कला	वजीर सिंह	
10	रात में एक चोर घर में घुसा !! (संकलित)	वजीर सिंह	
11	तुम कब बदलोगे	बोगिरेड्डी श्रीनिवास राव	
12	कोरोना प्रभाव	देवनाथ मिश्रा	
13	कोरोना चित्र	सागर शर्मा	
14	खुद की खोज	प्रकाश जीवन गुप्ता	
15	नही जी रहे अगर देश के लिए तो अपराधी हो (संकलित)	विवेक कुमार सैनी	
16	भारत महिमा (संकलित)	सोमबीर	
17	उरी हमला और आतंकवाद	देवनाथ मिश्रा	
18	मेरी कविता	पी. एल. एन. शर्मा	
19	माँ मैं दूर हूँ	सोनाली कुमारी	
20	कितने दूर, कितने पास?	आरती	
21	तिमाही प्रगति रिपोर्ट प्रपत्र में आंकड़ें भरने की विधि	सागर शर्मा	
22	कविता	गौरव कुमार	
23	माँ मैं तो तेरी परछाई हूँ	ज्योति दीक्षित	
24	कामयाबी का रहस्य	ए. प्रशान्ता कुमारी	
25	हिन्दी	प्रकाश जीवन गुप्ता	
26	साहस - एक सोच (संकलित)	रितु सिंह	

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत

AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA

सत्यमेव जयते

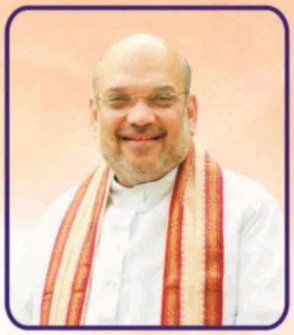

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिन के शुभ अवसर पर, मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देना चाहता हूं।

पूरी दुनिया में हमारा देश, एक अलग प्रकार का देश है । कई प्रकार की संस्कृतियां, कई प्रकार की कलाएं और कई प्रकार की भाषाओं का मेलजोल यहां पर दिखाई पड़ता है। यह हमारी बहुत बड़ी ताकत है । हम सभी दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र हैं । अनेक भाषाएं एवं संस्कृतियां हमारी न केवल विरासत हैं, हमारी ताकत भी हैं, इसलिए हमें इसको आगे बढ़ाना है। सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे, इस गौरवशाली देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच, सदियों से, कई भाषाओं ने संपर्क बनाए रखने का काम किया है। हिंदी इसमें प्रमुख भाषा रही है और ये योगदान जो हिंदी का है इसको देश के कई नेताओं ने समय-समय पर सराहा है और हिंदी ने भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। हिंदी भाषा और बाकी सारी भारतीय भाषाओं ने मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है । हिंदी के साथ बृज, बुंदेलखंडी, अवधी, भोजपुरी, अन्य भाषाएं और बोलियां इसका उदाहरण हैं। हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों की अविरल धारा, मुख्य रूप से हिंदी भाषा से ही जीवन्त तथा सुरक्षित रह पाई है। हिंदी भाषा ने, बाकी स्थानीय भाषाओं को भी,बल देने का प्रयास किया है । हर राज्य की भाषा को,हिंदी ताकत देती है । हिंदी की प्रतिस्पर्धा कभी भी स्थानीय भाषा से नहीं रही, यह पूरे भारत के जनमानस में ज्यादा स्पष्ट होने की जरूरत है । 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं का प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहां आवश्यक है या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए, हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिंदी में किया जाए और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए । भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों तथा बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ वे सरकारी कामकाज में, मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज भारत एक संसाधन-संपन्न शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है और इसमें देश की समृद्ध भाषा हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। वैश्विक मंचों पर प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में दिए गए भाषणों से, हिंदी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है। इससे देश की युवा पीढ़ी भाषा के साथ जुड़ने की ओर अग्रसर हुई है। बस, आवश्यकता इस बात की है कि आगामी पीढ़ी को अधिक से अधिक सूचनाएं हिंदी में उपलब्ध कराई जाएं और उनमें ऐसे संस्कार विकसित किए जाएं कि वह मूल रूप से हिंदी भाषा में काम करें।

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के लिए ई-टूल्स सुदृढ़ करने का काम किया जा रहा है। 'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके। इसके अतिरिक्त लीला हिंदी प्रवाह, ई-महाशब्दकोश मोबाइल एप्लीकेशन भी हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। राजभाषा विभाग द्वारा ई-सरल हिंदी वाक्यकोश का विकास किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो पाएंगे। आज हिंदी दिवस के मौके पर मेरा यह कहना है कि सभी मंत्रालय सरकारी कामकाज में इन ई-टूल्स का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें।

विगत कई माह से पूरी दुनिया अत्यंत विषम परिस्थिति से गुज़र रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत कोरोना महामारी से लड़ने में सफल रहा और इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों के साथ प्रत्यक्ष नागरिकों ने भी सहयोग किया है। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर देश की जनता को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। कोरोना महामारी से उत्पन्न अप्रत्याशित संकट की स्थिति के कारण, जनहित को प्राथमिकता देते हुए इस वर्ष 'हिंदी दिन समारोह' का आयोजन नहीं किया जा रहा है लेकिन जिन मंत्रालयों, विभागों, संस्थाओं, बैंकों, सरकारी उपक्रमों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों ने पूरे वर्ष पूरी निष्ठा से हिंदी में श्रेष्ठ कार्य किया है और प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीते हैं, उन्हें मैं अपनी ओर से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। इसके साथ-साथ हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए प्रदान किए जाने वाले राजभाषा गौरव पुरस्कार विजेता भी बधाई के पात्र हैं ही। मैं आशा करता हूं कि आप सभी पुरस्कार विजेता यहीं से थकेंगे नहीं, भविष्य में, हिंदी के लिए कार्य करने के लिए, उच्च और अनुकरणीय मानदंड प्रस्थापित करते रहेंगे। ये प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा थी कि देश इस आपदा को अवसर में परिवर्तित करे। राजभाषा विभाग ने भी इस अवसर का सकारात्मक उपयोग करते हुए सूचना तकनीक का सहारा लिया और पहली बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसे ऑनलाइन माध्यमों के जरिए, बड़ी संख्या में, ई-निरीक्षण एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया। राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन शुरू किया गया जिसमें परंपरागत क्लासरूम टीचिंग को परिवर्तित कर, ऑनलाइन वेब कांफ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन करें, तत्परता के साथ अनुपालन करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों से राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ, निर्बाध रूप से उठा पाए।

आइए! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम प्रतिज्ञा लें कि हिंदी की उन्नति व प्रगति की यात्रा पूरे समर्पण के साथ हम आगे बढ़ाते हुए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को सभी स्थानीय भाषाओं के साथ में रखते हुए, हिंदी के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे। इस मौके पर, मैं देश के युवाओं को भी कहना चाहता हूं कि जब स्थानीय भाषा में बोलने वाला साथी हो तब और कोई भाषा का प्रयोग न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग का आग्रह रखिए। मैं अभिभावकों को भी कहना चाहता हूं,- अपने बच्चों के साथ भारतीय भाषाओं में बात करने की बात का संस्कार डालें और अपनी भाषाओं की यात्रा को हम आगे बढ़ाएं। मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति से अन्य भारतीय भाषाओं व हिंदी का समानांतर विकास होगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु, विश्वपटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित होगी।

'हिंदी दिन' के शुभ अवसर पर आप सभी को पुन: मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

भारत माता की जय!

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2020

(अमित शाह)

सत्यमेव जयते

श्री जे. एस. करपे
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) हैदराबाद

सन्देश

मुझे हर्ष है कि महालेखाकार कार्यालय परिसर में स्थित कार्यालयों के संयुक्त प्रयासों से राजभाषा हिंदी में विभागीय पत्रिका "कलिका" का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग एवं निरंतर प्रगति में सहायक होगी। यह पत्रिका हमारी सृजन शक्ति एवं रचनात्मक की अभिव्यक्ति का सशक्त मंच है।

किसी भी सभ्यता की उन्नति उसकी सांस्कृतिक एवं साहित्यिक उपलब्धियों से आंकी जाती है। इसी दिशा में "कलिका" पत्रिका हमारे कार्यालय द्वारा उठाया गया एक कदम है। राजभाषा हिंदी के कार्यालयीन प्रयोग द्वारा हम अपने संवैधानिक कर्तव्यों को तो पूरा करते हैं, साथ ही साथ अपने विचारों की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में हिंदी का प्रसार भी करते हैं। मुझे आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

पत्रिका को मूर्त रूप देने में कर्मचारियों एवं अधिकारियों की सहभागिता एवं योगदान हेतु मेरी ओर से आप सभी को शुभकामनाएँ।

हस्ता/-
(जे. एस. करपे)

★ ★ ★

सत्यमेव जयते

श्री अनिन्दा दासगुप्ता
महालेखाकार (ले. एवं ह.) तेलंगाना, हैदराबाद

सन्देश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हो रहा है कि भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के हैदराबाद स्थित हमारे कार्यालयों की हिंदी पत्रिका "कलिका" का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा का विकास हमारा संवैधानिक दायित्व होने के साथ-साथ हमारी नैतिक जिम्मेदारी भी है।

कार्यालय सदस्यों के राजभाषा के प्रति लगाव और उनकी भावनाओं को अभिव्यक्ति देने और उनके आदान-प्रदान में हिंदी पत्रिका का अहम योगदान रहता है। हमारी पत्रिका "कलिका" के माध्यम से कार्यालय के सेवारत/सेवानिवृत कार्मिकों और उनके परिवार के सदस्यों से लेख/कवितायें/संस्मरण/चित्र इत्यादि आमंत्रित करते हुए रचनाकारों के अनुभव पत्रिका पाठकों के साथ साझा करने का प्रयास किया गया है।

मुझे उम्मीद है कि हमारी पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के सभी सदस्यों को राजभाषा में कार्यालयी कार्य करने और आत्मीयता से राजभाषा से जुड़ने की प्रेरणा मिलेगी जिससे राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति और निरंतरता को बनाए रखने के उद्देश्य की सार्थकता सिद्ध होगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के उज्जवल भविष्य की उम्मीद करता हूँ।

हस्ता/-
(अनिन्दा दासगुप्ता)

★ ★ ★

सत्यमेव जयते

श्रीमती सुधा राजन
महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तेलंगाना, हैदराबाद

सन्देश

इस कार्यालय की गृह पत्रिका "कलिका" का प्रकाशन होने पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के सृजनात्मक उत्थान हेतु किया गया यह प्रयास सराहनीय है। जिस प्रकार से नाना प्रकार के फूलों व मोतियों को पिरोकर एक माला को सुसज्जित किया जाता है, उसी प्रकार भांति-भांति रचनाओं द्वारा इस "कलिका" रूपी माला को सुसज्जित करने का प्रयास किया गया है। कृतियों का यह उत्कृष्ट संकलन हमारे कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभा का दर्पण है। यह पत्रिका अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपने विचार एवं भावनाएँ व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है।

आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है जिस तरह पुष्प अपनी सुगंध चारों ओर फैला कर वातावरण को सुगंधित कर मन को प्रफुल्लित कर देता है, उसी प्रकार इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ अपने ज्ञान व रोचकता से सभी पाठकों को मंत्रमुग्ध कर देंगीं।

इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों व सम्पादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ और आशा करती हूँ कि भविष्य में भी इस पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु प्रयास जारी रखे जाएँगे।

हस्ता/-
(सुधा राजन)

★ ★ ★

सत्यमेव जयते

श्री संतोष वी. डावरे,
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशा.),
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तेलंगाना, हैदराबाद

सन्देश

कार्यालय की गृह पत्रिका "कलिका" के प्रकाशन होने पर मुझे अत्यंत गर्व का अनुभव हो रहा है। इस पत्रिका की रचनाओं में विभिन्न रसों का समावेश है। जिस तरह हर रस का एक भाव होता है, उसी प्रकार हर रचना अपने आप में एक नए भाव से ओत-प्रोत है। राजभाषा हिन्दी के प्रति पाठकों में रूचि जाग्रत करने एवं उनमें नई ऊर्जा व उत्साह का संचार करने हेतु किया गया यह प्रयास प्रशंसनीय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के समस्त रचनात्मक स्तम्भ हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

अधिकारियों/कर्मचारियों ने विषम परिस्थितियों में भी अपने विचारों को जिस उत्साह और लगन से व्यक्त किया है, वह सराहनीय एवं हृदयस्पर्शी है। इन रचनाओं में रचनाकारों का हिंदी के प्रति प्रेम व निष्ठा का भाव स्पष्ट रूप से झलक रहा है।

इसके प्रकाशन में सहयोगी सभी अधिकारियों/कर्मचारियों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देते हुए, इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

हस्ता/-
(संतोष वी डावरे)

★ ★ ★

सत्यमेव जयते

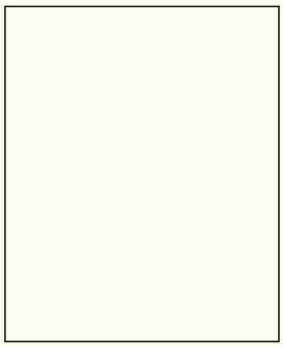

श्री आर. वी. के. साई गांधी,
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशा.) तेलंगाना,
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं ह.) तेलंगाना,

सन्देश

यह हमारे लिए अत्यंत आनन्द का विषय है कि राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु हमारी हिंदी पत्रिका "कलिका" का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिकाओं के माध्यम से मुख्यालय कार्यालय के साथ-साथ हमारे विभाग के अन्य कार्यालयों की उपलब्धियों और सांस्कृतिक गतिविधियों की भी जानकारी प्राप्त होती है।

'ग' क्षेत्र में होने के बावजूद कार्यालय सदस्यों के द्वारा विभिन्नताओं में एकता के सूत्र का परिचय दिया गया है। हम सबका प्रयास है कि कार्यालय के दैनिक कार्यों में हिंदी की प्रतिशतता को बढ़ाया जाए। हम इस क्षेत्र में आधारभूत स्तर पर बदलाव करते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

पत्रिका से जुड़े प्रत्येक रचनाकार, सम्पादक मण्डल के सदस्यों और पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ और पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

हस्ता/-
(आर. वी. के. साई गांधी)

★ ★ ★

सत्यमेव जयते

श्री आदित्य रा. भोजगाढिया
उप महालेखाकार (प्रशा.)
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं ह.) आंध्र प्रदेश

सन्देश

विभागीय राजभाषा हिन्दी पत्रिका 'कलिका' का प्रकाशन पूरे कार्यालय के लिए अपार हर्ष का विषय है। यह पत्रिका अधिकारियों/कर्मचारियों को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करती है। इसके माध्यम से ना केवल हमारे हिन्दी के ज्ञान में बढ़ोतरी होगी बल्कि हमें अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन भी मिलेगा। इसमें संकलित रचनाएँ हिन्दी के प्रति पाठकों में लगाव उत्पन्न करेंगी।

जैसा कि आप सभी को ज्ञात है कि वर्तमान में पूरा विश्व कोविड महामारी से जूझ रहा है। इस मुश्किल घड़ी में यह पत्रिका हमें मनोरंजन एवं उल्लास प्रदान करेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन तथा उत्तरोत्तर विकास के लिए संपादक मण्डल व रचनाकारों को मेरी शुभकामनायें।

हस्ता/-
(आदित्य रा. भोजगाढिया)

★ ★ ★

सत्यमेव जयते

श्री राकेश सी. सज्जन,
उपनिदेशक (प्रशासन एंव प्र. कर),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) हैदराबाद

सन्देश

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम एवं महत्वपूर्ण आधार है। अपनी प्रतिभाओं एवं विचारों को अभिव्यक्त करने एवं कार्यालय में सकारात्मक एवं अनुकूल वातावरण तैयार करने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। यह कार्य़ राजभाषा हिंदी ने बखूबी किया है। भाषाई विविधता के बावजूद अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा कार्य़ालयीन कार्य़ में हिंदी का प्रयोग हमारे संवैधानिक कर्तव्यों के पालन के साथ हिंदी के प्रति सम्मान को दर्शाता है।

इसी क्रम में हमारे कार्य़ालय की संयुक्त हिंदी पत्रिका "कलिका" इसका अनूठा प्रमाण है। विभिन्न विधाओं से सजी यह पत्रिका सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के हिंदी के प्रति प्रेम एवं निष्ठा को प्रदर्शित करती है। भाषाई समानता एंव पेशेवर रचनात्मकता न होने के बावजूद भी कर्मीवृंद की हिंदी के प्रति रूचि को "कलिका" के रूप में प्रस्तुत करना सराहनीय है।

मुझे प्रसन्नता है कि अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा दर्शाए गए लगाव एवं संपादक मंडल के प्रयासों से इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया है। पत्रिका के सफल एवं निरंतर प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

हस्ता/-
(राकेश सी. सज्जन)

★ ★ ★

वजीर सिंह

संपादक की कलम से ..!

हमारे विभाग के हैदराबाद स्थित कार्यालय परिसर के चार कार्यालयों की हिन्दी पत्रिका 'कलिका" का नया अंक (53वाँ अंक) आप सबके बीच लाते हुए बहुत ही खुशी हो रही है। पत्रिका के माध्यम से कार्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के दृश्यों और कार्यालय सदस्यों के वैचारिक विभिन्नताओं वाले विभिन्न लेख/कविताओं के माध्यम से पत्रिका को रोचक बनाने की पहल की गई है।

किसी भी विभाग के राजभाषा अनुभाग में कार्य अनुभव अलग ही होता है; जिसमें कार्यालय में पदस्थ विभिन्न क्षेत्रीय पृष्ठभूमि वाले प्रत्येक सदस्य से सीधे संवाद करने और एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखने का मौका मिलता है तथा वाक-पटुता और शब्दावली भी तेज होती है। सोच रहा हूँ कि जीवन के प्रत्येक खट्टे-मीठे अनुभव को यदि सेवानिवृति (रिटायरमेंट) के बाद एक निजी और व्यक्तिगत पुस्तक के माध्यम से आप तक पहुँचा पाऊँ तो ज्यादा सार्थक होगा और ज्यादा अनुशासित भी।

तब तक कोशिश रहेगी कि विभाग के मुख्यालय या किसी भी राज्य के क्षेत्रीय कार्यालय की प्रकाशित वार्षिक पत्रिका के माध्यम से आप सबसे जुड़ा रहूँ।

हमारी इस पत्रिका प्रकाशन के लिए कलिका परिवार के विभागाध्यक्षों और अन्य उच्च अधिकारियों के मार्गदर्शन के साथ-साथ सभी सहयोगी सदस्यों का भी आभारी हूँ; इसके साथ ही इमरान भाई का भी आभारी हूँ जो पत्रिका प्रकाशन में हर वक्त जुड़े रहे।

आप सबके सुझाव हमें निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे और आगामी पत्रिका में वैचारिक विभिन्नताओं को स्थान देकर हमें आबादी के आधार पर दुनियाँ के सबसे बड़ी लोकतंत्रात्मक व्यवस्था के सच्चे प्रहरी बनाने में मदद करेंगे।

धन्यवाद ।

आपका,

वजीर सिंह

(वज़ीर सिंह)

★ ★ ★

माँ

माँ शब्द नहीं, माँ महामंत्र, माँ मानस की चौपाई है।
माँ की महिमा अद्भुत, अनुपम, माँ अंबर की ऊँचाई है ॥ १ ॥
माँ की कर्तव्यनिष्ठता पर सारा त्रिभुवन बलिहारी है।
माँ सत्यलोक, सचखण्ड, स्वर्ग, माँ से जग की फुलवारी है ॥ २ ॥
माँ आत्मसत्व को तन देकर, यह सकाल सृष्टि साकार करे ।
अपने आँचल का दूध पिला संजीवनी से आभार भरे ॥ ३ ॥
माँ की अधजली रोटियों में,षट रस व्यंजन का स्वाद मिले।
उसके सूखे सागों में भी, जीवन गति की फरियाद मिले ॥ ४ ॥
माँ जब देती आशीर्वचन, वह वेद-वाक्य बन जाता है।
चूमती हथेली जब मेरी, तब सत्या साध्य हो जाता है ॥ ५ ॥
माँ की गोदी है परमधाम, माँ की लोरी में गीता है।
माँ का पल्लू है अभयवृक्ष, माँ सुंदर, सुखद, पुनीता है ॥ ६ ॥
शिशु को नज़र न लग जाए कहीं, माँ काला टीका देती है।
मंदिर, मस्जिद की चौखट से, ताबीज - गन्ड़ा वह लेती है ॥ ७ ॥
माँ ही लक्ष्मी, काली, दुर्गा, माँ ही है सरस्वती पावन।
माँ की अनुकंपा मिले अगर, तो जीवन हो जाए सावन ॥ ८ ॥
जो तिरस्कार करते माँ का, वह कभी नहीं सुख पाते हैं।
जो नमस्कार करते माँ को, वह कभी नहीं दु:ख पाते हैं ॥ ९ ॥
आओ वन्दन, अभिनन्दन कर, उस माँ का मान बढ़ाएँ हम।
जिसके चरणों में सकाल तीर्थ, उनको ही शीश झुकाएँ हम ॥ १० ॥

★ ★ ★

रचनाकार – श्री कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव 'पंकज' (से० नि० प्राध्यापक),
जो गौरव कृष्ण श्रीवास्तव,वरिष्ठ लेखा परीक्षक, के पिता हैं।

"मैं" नहीं मरूँगा

कल सुबह जब नजर नहीं आउंगा मैं,
तो सोचेंगे लोग के मर गया हूँ मैं।

मगर आप गौर से अपने भीतर देखें,
तो लगेगा के आपके दिलों में घर कर गया हूँ मैं।

मैं कोई व्यक्ति नहीं, मैं एक सोच हूँ, एक विचार हूँ,
जिसमें सबके लिए बस प्यार है।

मैं कल किसी और में था आज मुझ में हूँ,
कल किसी और में जब नजर आऊँगा मैं,
तो कैसे कोई कह सकेगा के, मर गया हूँ मैं।
मैं नहीं मरूँगा ....!!!

★ ★ ★

(इस कविता के लेखक स्व. श्री प्रदीप कुमार महेन्द्रा, भूतपूर्व प्राध्यापक,
वाणिज्य विभाग, बद्रुका कॉलेज में कार्यरत थे और श्रीमती लाजवंती ठाकोर, व.ले.अ., के भाई थे।)

एक शिक्षक का दिमाग सृजनशील होना चाहिये।
- डॉ अब्दुल कलाम

धवल किशोर सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

विज्ञान और धर्म

कहते हैं कि विज्ञान और धर्म दोनों ही सच्चाई को जानने के तरीके हैं, परन्तु जैसे-जैसे विज्ञान आगे बढ रहा है, धर्म के लिए स्थान सिकुड़ता जा रहा है। कहने का मतलब है कि जिस चीज को विज्ञान नही समझा पा रहा है, लोग उसे भगवान की मर्जी समझ कर स्वीकार कर लेते हैं। लेकिन ये अन्तर भी धीरे धीरे खत्म हो रहा है। इसका कारण क्या है? विज्ञान के विकास का कारण है कि उसने प्रश्न को स्वीकार ही नहीं किया बल्कि बढ़ावा भी दिया और धर्म ने इसकी संभावना ही खत्म कर दी। दोनों, विज्ञान और धर्म, की शुरूआत मानने से ही होती है, पर जहाँ विज्ञान मानने से जानने तक पहुँचता है, वहाँ धर्म मान कर ही संतुष्ट हो जाता है। धर्म, बिलीफ सिस्टम तैयार करता है और अगर कोई व्यक्ति प्रश्न करता भी है तो, सिस्टम का जड़त्व उसे पीछे धकेल देता है, परंतु विज्ञान सतत विकास को बढ़ावा देता है। जब न्यूटन के गुरूत्वाकर्षण के सिद्धान्त को आईन्सटीन ने गलत साबित किया तो, नूटोनियन मेकनिक्स वाले उसे फाँसी पर लटकाने नहीं आए। वैसे ही जब आईन्सटीन के सिद्धान्त को नील बोर ने गलत साबित किया तो, आईन्सटीन की तीव्रता के बावजूद लोगों ने बोर के. क्वांटम थियरी को गले लगाया। उस समय किसी वैज्ञानिक ने कहा था कि 'Einstein is convincing but incorrect and Bohr (Neils Bohr) is confusing but right.'। इसलिए विज्ञान इवॉल्व करता है और धर्म पुरातन में जीता है।

अभी भी हमारी अधिकतर धार्मिक मान्यताएँ कम से कम 1400-1500 साल पुरानी हैं, पर धर्म जरूरी है क्योंकि यह जीवन को आशा और उद्देश्य देता है और साथ ही विज्ञान की प्राकृतिक सीमा है। लेकिन धर्म अलौकिक और अधिदैविक चीजों की भी व्याख्या करने की क्षमता रखता है इसलिए धर्म के भविष्य के लिए यह जरूरी है कि हम जाँच पड़ताल करें, परीक्षा लें। सुकरात ने कहा था कि 'unexamined life is not worth living'. उसी प्रकार 'unexamined religion is not worth believing'. हर तरह से जिस धर्म मे आपका विश्वास है, उसे जाँच कर देखिए कि वह खरा उतर रहा है या नहीं, अगर नहीं उतर रहा है तो मैं ये नहीं कह रहा हूँ कि आप वो धर्म छोड़ दीजिए, बस जो बात गलत है, उसे छोड़ दीजिए। इससे आप स्वयं के साथ धर्म और पूरी मानव जाति पर अहसान करेंगे। सुकरात की बातों का जवाब किसी दूसरे दार्शनिक ने दिया था कि 'unlived life is not worth examining'. वैसे ही 'Non-believed religion is not worth examining'. इसलिए कृपया जिस धर्म मे आपका विश्वास है, उसे ही जाँचे, दूसरों का धर्म जाँचेंगें तो लाभ कुछ नहीं होगा सिर्फ वैमनस्य बढ़ेगा।

धर्म का लक्ष्य अध्यात्म होता है। जब भी आप मन से प्रार्थना या ध्यान लगाते हैं तो आपको आत्मिक अनुभव देता है और ये विज्ञान कह रहा है। BBC की एक रिपोर्ट के अनुसार ध्यान या प्रार्थना में लगे लोगों के ब्रेन स्कैन से पता चलता है कि उस समय उनका पेयराइयिटल लोब यानी ब्रेन का वह भाग जो आपको स्वयं के होने का अहसास देता है, अलग पहचान देता है, वह बंद हो जाता है, जिससे स्वयं और दूसरे का अंतर मिट जाता है। आप स्वयं को, आस पास के वातावरण को, पृथ्वी को, यूनिवर्स को एक पाते हैं। मेरे ख्याल से इसी अनुभव के आधार पर उपनिषद् मे 'तत त्वां असी' और 'अहम ब्रहास्मि' कहा गया है।

इसलिए आपके ब्रेन की वाइरिंग इस तरह से की गयी है कि ये आत्मिक अनुभव को सुसाध्य बनाए पर ये अनुभव व्यक्तिगत उपलब्धता के लिए है। व्यक्तिगत धर्म को रिलिजन का बिलीफ सिस्टम मत बनाइए, भीड़ की मानसिकता मे जड़त्वता और बासीपन है, खुद को इस दुर्गंध से बचाईए।

★ ★ ★

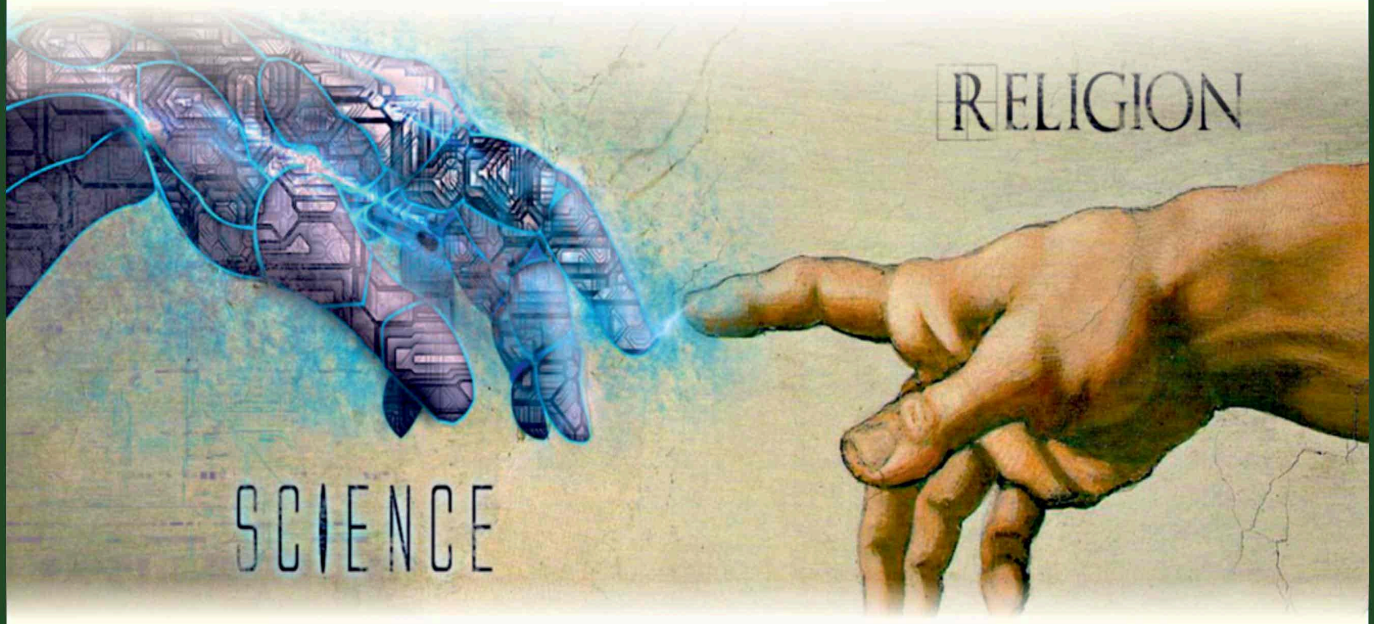

बुद्धिमता बदलाव के अनुरूप ढलने की कला है।
- स्टीफन हॉकिंग

- रितु सिंह

जानना चाहती हूँ

ऋग्वेद से पहले क्या था,
और हमारे बाद क्या होगा,
जिंदगी क्या और क्यों है,
इसके सही मायनों को
जानना चाहती हूँ !!!

दुनियाँ क्या और क्यों है,
हम क्या और क्यों हैं,
मेरे लिए जगत क्या है,
जिसके लिए मैं स्वयं जगत हूँ उसे,
जानना चाहती हूँ !!!

जगत के परे क्या है,
जगत में मेरे होने ना होने को,
उत्पति और विनाश को,
सृष्टि के नियमों को,
प्रकृति के गतिमान को,
विधि के विधान को
जानना चाहती हूँ !!!

शिव, बुद्ध और महावीर को,
अल्लाह, पैगम्बर और नबी को,
रघुकुल के "मर्यादा-पुरुषोतम" को,
माता जानकी को,
कुरुक्षेत्र में दिए "गीता ज्ञान"को
"उसके विराट-रूप" को
जानना चाहती हूँ !!!

सच-झूठ को,
डर-भय को,
स्वाभिमान-अभिमान को,
सम्मान-अपमान को,
ज़िंदा होकर भी कोई क्यों मरा रहता है,
मरकर भी कोई कैसे ज़िंदा रह जाता है,
जानना चाहती हूँ !!!

खुद के सवालों के जवाब खुद से चाहती हूँ,
खुद में ही खुद को टटोलना चाहती हूँ,
जानना चाहती हूँ !!!
जानना चाहती हूँ !!!

★ ★ ★

<u>हँसी-ठिठोली</u>

टीचर : बच्चों, इंसान वो है जो हमेशा दूसरों की मदद करें।

स्टूडेंट : लेकिन मैडम Exam के समय ना तो आप खुद इंसान बनती हो और ना ही दूसरों को बनने देती हो। 🙂

महाराज गुप्ता

शिक्षा का महत्व

मैं शिक्षा के महत्व को केवल सुनी - सुनाई बातों के आधार पर बयां नहीं कर रहा हूँ बल्कि यह सत्य पर आधारित है जिसे मैंने अपनी आँखों से देखा और अनुभव किया है। यह कहानी मेरे एक मित्र सार्थक प्रसाद जी की है, जिनको ईश्वर ने बचपन से ही उनके जीवन की कठिनाइयों की कड़ी एवं असहनीय परीक्षा ली। वह मेरे गाँव के ही थे। उनकी माता जी एक गृहणी थीं एवं पिताजी एक मानसिक रोगी थे जो कि बचपन में ही घर त्याग कर कहीं चले गए थे और उनके गम में उनकी माताजी थोड़ी असामान्य महिला हो गयी थीं। इनका पालन पोषण उनके ननिहाल में नाना-नानी ने किया, पर ईश्वर की कुटिलता अब भी खत्म नहीं हुई। जब वह एक वर्ष के हुए तभी वह पक्षाघात (polio) का शिकार हो गए और शरीर के निचले हिस्से ने कार्य करना बंद कर दिया। चूंकि ननिहाल के लोग भी धनाढ़य परिवार से नहीं थे कि उनका इलाज हो सके; सरकारी अस्पताल में उनका इलाज हुआ समय बीतने के साथ-साथ लाठी के सहारे वे चलने फिरने लगे। लोगों की उनकी प्रति दया भाव वाली दृष्टि, बेचारापन, विकलांगता, माता-पिता के प्यार के लिए तरसता जीवन, गरीबी, असहायपन एवं किसी भी चीज के लिए तरसना, ये सभी उनके जीवन के अभिन्न अंग थे।

उनकी शिक्षा गाँव के प्राथमिक विद्यालय से प्रारम्भ हुई। चूंकि पढ़ने-लिखने में वे काफी होशियार थे, अतः सभी अध्यापकगणों के चहेते थे और शायद इसी कारण सभी छात्र उन्हें अपना दोस्त बनाने में हिचकिचाते नहीं थे। उस समय प्रथम कक्षा से पाँचवीं कक्षा तक के लिए प्राथमिक विद्यालय गाँव में ही थे। आगे की शिक्षा अर्थात मिडिल एवं हाई स्कूल शिक्षा के लिए गाँव से 5 किलोमीटर दूर जाना था। अब फिर से उसके साथ एक समस्या आ गई कि आगे की पढ़ाई कैसे जारी रखें और और उस समय दूरस्थ शिक्षा (open school education) के बारे में जानकारी भी न थी कि कोई ऐसा माध्यम भी होता है जिसमें बिना स्कूल गए पढ़ाई जारी रखा जा सकता है। इस समस्या का भी निदान निकला। उनके दोस्तों ने कहा कि हम लोग अपनी साईकिल से स्कूल ले जाया करेंगे और उसी आश्वासन पर व उनके सहयोग से उन्होने अपनी हाई स्कूल की शिक्षा प्रारम्भ की। जब वे नौवीं (9th) कक्षा में थे तभी ईश्वर की एक और विपदा/कहर आन पड़ा। एक दिन जब वे स्कूल से वापस अपने दोस्त के साथ साईकिल से आ रहे थे तभी एक दोपहिया वाहन ने टक्कर मार दी और उनका दोस्त तो बाल-बाल बच गया परंतु सार्थक जी को दायें पैर की हड्डी टूटकर बाहर निकल गई। किसी तरह अस्पताल पहुंचाया गया। 4 महीने तक बिस्तर पर रहे। उनकी नानी ने सेवा की, फिर थोड़ा ठीक होने के पश्चात चलना आरंभ किया, तो अब लाठी के सहारे भी चलना मुश्किल हो गया।

धीर-धीरे पूरे शरीर में कमजोरी आ गई। यहाँ तक कि डॉक्टर ने तंत्रिका तंत्र संबंधी (moter neurorus) एक नई बीमारी बता दी और यह भी बताया गया कि अगले 6 माह तक वह बिस्तर पर ही रहेंगे और अगले 6 माह में शायद उनकी जीवन-लीला समाप्त हो जाएगी।

खैर अब जो होना था, उसे ईश्वर पर छोड़ दिया। अब सार्थक जी ने घर पर ही बैठकर अपने दोस्तों के नोट्स से 10वीं कक्षा (metric) की तैयारी की और प्रथम श्रेणी में उतीर्ण हुए। इसी बीच उनका स्वास्थ्य, उनकी जीने की इच्छा शक्ति और शारीरिक गतिविधि में भी थोड़ा सुधार होने लगा। उनका फिर से लाठी के सहारे से चलना-फिरना प्रारम्भ हो गया। 10वीं के बाद जब +2 की पढ़ाई करने की बात आई तो उनके मामाजी ने यह कहकर मना कर दिया कि ना तो आगे पढ़ाने की मेरे औकात है और न ही तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा है। तब सार्थक जी ने गाँव के बच्चों को टयूशन पढ़ाने का कार्य आरंभ किया और उसी पैसे से अपनी पढ़ाई (आटर्स से) आरंभ की। उन्होने समय के साथ स्नातक (graduation) की परीक्षा उतीर्ण की और साथ ही साथ, गाँव के कुछ लड़के जो कि पैसे के अभाव में शहर जाकर प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने में सक्षम नहीं थे, उनके साथ एक ग्रुप बनाकर सिविल परीक्षा की तैयारी में लग गए। इस दौरान नोट्स, किताबें एवं अन्य पाठ्य सामग्री उन दोस्तों से मिल जाया करते थे जो कि शहरों में रहकर तैयारी कर रहे थे। आखिरकार इतनी कठिनाइयों (जिसमें शारीरिक, मानसिक एवं पारिवारिक तीनों शामिल थे) के बावजूद उनका बहादुरी से सामना करने के परिणामस्वरूप ईश्वर को झुकना पड़ा और उनका चयन केंद्र सरकार में कर्मचारी चयन आयोग के माध्यम से ए.जी. ऑफिस में लेखापरीक्षक के रूप में हुआ और साथ ही साथ उनके साथ तैयारी करने वाले सभी दोस्तों का भी कहीं न कहीं चयन हो गया। आज वे सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी के रूप में दिल्ली में अपनी माताजी, पत्नी एवं एक बच्चे के साथ खुशी एवं सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। ईश्वर उन्हें हमेशा खुश और स्वस्थ रखे।

इस जीवंत अनुभव के आधार पर यही बात सिद्ध होती है कि शिक्षा ही व्यक्ति का सबसे बड़ा गहना है और केवल इसी के माध्यम से वह अपना विकास कर सकता है और सब कुछ हासिल कर सकता है। कहा भी गया है कि जहाँ चाह, वहाँ राह, बस आपकी सोच अच्छी एवं सकारात्मक हो।

★ ★ ★

उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य को प्राप्त ना कर लो।

- स्वामी विवेकानंद

वर्ष 2019 के हिन्दी पखवाड़े की झलकियाँ

कार्यालय परिसर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

कार्यालय परिसर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

वर्ष 2020 के हिन्दी पखवाड़े की झलकियाँ

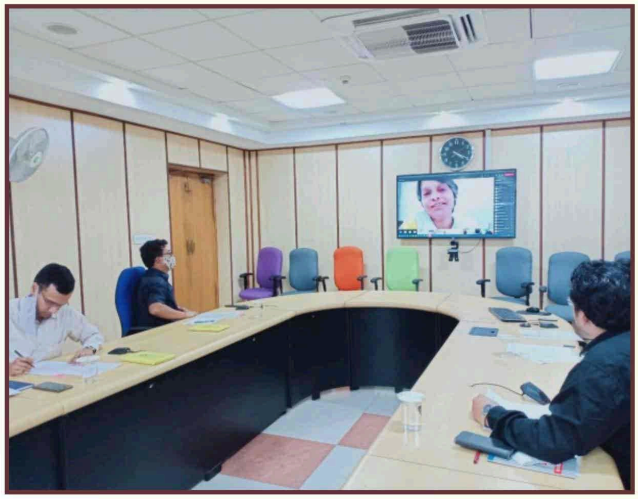

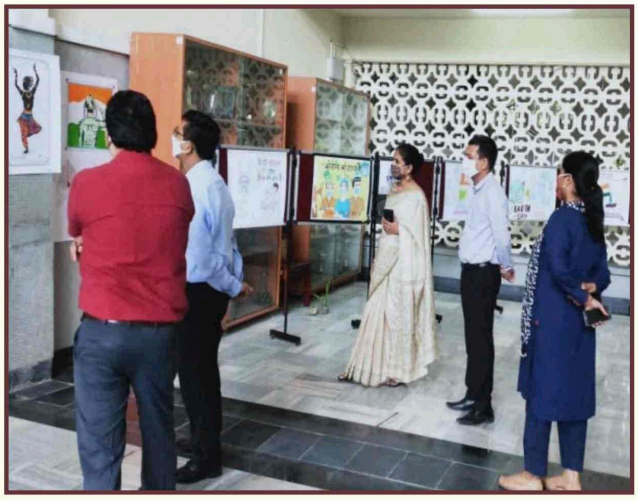

- वजीर सिंह

"उसके" लिए

जिंदगी भी कमाल है !!!
इसमें एक दौर
ऐसा भी आता है
जब सब कुछ बदल जाता है
अहसास बदल जाते हैं
जज्बात बदल जाते हैं !

जब कोई और अच्छा नहीं लगता
उसके “सिवा”,
सिर्फ “उसे”
देखने का मन करता है,
सिर्फ “उसे”
सुनने का मन करता है,
सब कुछ "उसके" लिए
करने का मन करता है !

खुद को मिटाकर भी
“उसे” मनाने का
मन करता है,
वो दौर ही
ऐसा होता है
जिसमें रहते हुए भी
कोई इंसान
मोहब्बत के अलावा
बगावत भी सीखता है !

खड़ा हो जाता है
सबके ख़िलाफ़
सिर्फ "उसके" लिए
जिसके बिना जिंदगी
अधूरी सी लगती है!

क्या होता है
जब "वो" छोड़ के जाता है ....!

बड़े-बड़े कलेजे वालों को
मैंने रोते देखा है,
घुटते देखा है,
लोगों को खुद को ही
डुबोते देखा है
अंधे नशे के समंदर में
और जब
उन्हें ये अहसास होता है
कि वो सब तो झूठ था
केवल झूठ,
तब उनमें से कम ही संभल पाते हैं
जब सबसे ज्यादा जरूरत थी
जिनके खड़े रहने की !

सब जानकर भी ताउम्र लगता है
कि सब कुछ तो है,
सब कुछ है
पर "उसके" सिवा !!!
कहीं कुछ कमी सी रह गई शायद,
गर वो भी होता
तो जिंदगी कुछ और होती !

जाने क्यूँ
बस कुछ ऐसा ही अहसास
जाने-अनजाने
हर उस दिल को होता है
जो धड़का था कभी
बेहिसाब

बस "उसके" लिए
"जिसके" बिना उसे
उसकी जिंदगी
अधूरी सी लगती है,
अधूरी सी लगती है !!!

★ ★ ★

एम. कोदंडराम,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) हैदराबाद

मैं कौन हूँ

मैं - यह सुनते ही सवाल आता है
आखिर मैं कौन हूँ ?

विशाल प्रकृति में सिमटा हुआ जीव
या एकांत में छाया हुआ सन्नाटा
रसमय भाव से भरा इंद्रधनुष
या भावविभोर सा जीता निशान
आखिर मैं कौन हूँ ?

जीवन के पहलू में सुलझता हुआ प्रश्न
या मृत्यु की चिता में बुझता हुआ जवाब
असमंजस्य में बहती हुई नाव
या समझौते में मिला हुआ किनारा
आखिर मैं कौन हूँ ?

★ ★ ★

हँसी-ठिठोली

एक अमेरिकी डॉक्टर भारत आया, बस स्टैंड पर एक किताब देखते ही उसे दिल का दौरा पड़ गया। 20 रुपये की इस किताब का नाम था "30 दिनों में डॉक्टर कैसे बने।"

विनय कुमार

हिन्दी हैं हम

हिन्दी हैं हम, वतन हैं हिंदुस्तान हमारा,
कितना अच्छा व कितना प्यारा है ये नारा।
हिन्दी में बात करें तो मूर्ख समझे जाते हैं,
अंग्रेजी में बात करें तो जैंटलमैन हो जाते।

अंग्रेजी का हम पर असर हो गया,
हिन्दी का मुश्किल सफर हो गया।
देशी घी आजकल बटर हो गया।
चाकू भी आजकल कटर हो गया।

अब मैं आपसे इजाजत चाहता हूँ,
हिन्दी की सबसे हिफाजत चाहता हूँ।

★ ★ ★

हिन्दी भाषा

हिन्दुस्तानी हैं हम गर्व करो हिन्दी भाषा पर,
उसे सम्मान देना और दिलाना है ये कर्तव्य
हम पर।

खत्म हुआ विदेशी शासन,
तोड़ दो अब उन बेड़ियों को।

खुले दिल से अपनाओ इस खुले आसमाँ को,
लेकिन ना छोड़ो धरती माँ के प्यार को।

हिन्दी है राष्ट्रभाषा हमारी,
करो न्यौछावर इस पर जिंदगी सारी।

★ ★ ★

- वजीर सिंह

जीने की कला

एक शहरी सेक्टर में एक कोर्नर पर एक कलेक्टर साहब का निजी घर था और उनकी पोस्टिंग नजदीकी दूसरे शहर में होने के कारण वो 10-15 दिन में एक बार ही उनके निजी घर पर आ पाते थे। उनके इस घर के सामने वाली लाइन में अंतिम मकान एक मास्टर जी ने खरीद लिया। दोनों परिवारों में दो-दो बच्चे थे और कभी छतों पर और कभी गली में एक-दूसरे को देखकर मुस्कुरा देते और ऐसा करके वो सभी बच्चे एक-दूसरे से परिचित हो गए।

एक दिन मोहल्ले में आइसक्रीम बेचने वाला आया तो मास्टर जी के बच्चों ने बोला कि हमें आइसक्रीम खानी है। मास्टर जी ने झट से 30 रूपये दिये और कहा, "जाओ खा लो।" कुछ देर बाद आइसक्रीम वाला कलेक्टर साहब के घर के सामने भी पहुँचा तो उसके बच्चों ने भी आइसक्रीम खाने के लिए कहा। इस पर कलेक्टर साहब ने कहा, "बच्चों यह "डर्टी" होती है, हाईजिनीक नहीं है, तुम दोनों बीमार हो जाओगे।" कलेक्टर साहब के दोनों बच्चे बेचारे मन मसोस कर बैठ गए और मास्टर जी के बच्चों को आइसक्रीम खाते हुए दूर से ही देखने लगे।

दो दिन बाद दोपहर को गली में मूँगफली और रेवड़ी बेचने वाला आ गया; फिर मास्टर जी के बच्चों ने मूँगफली खाने की इच्छा जताई तो उन्होने झट 20 रूपये दिये और उनके दोनों बच्चों ने उतनी ही फुर्ती से मूँगफली खा ली। अब मूँगफली और रेवड़ी बेचने वाला कलेक्टर साहब के घर के आगे पहुंचा तो उनके बच्चों ने भी मूँगफली और रेवड़ी खाने की डिमांड करी; तो कलेक्टर साहब की धर्मपत्नी ने बालकों को झिड़कते हुए कहा कि बेटा इस पर डस्ट लगी होती है, बीमारी हो जाती है। दोनों बच्चे फिर मुँह लटका कर बैठ गए।

कुछ दिन बाद मोहल्ले में एक मदारी आया जो बंदर नचा रहा था। मास्टर जी के बच्चों ने कहा, “पापा, हमे बंदर के साथ खेलना है।” मास्टर जी तो मास्टर जी थे और वो जानते थे कि जहाँ तक संभव और सुरक्षित हो बच्चों को दर्शन और प्रदर्शन का मौका दिया जाना चाहिए वरना उनका वैचारिक दमन होगा। बच्चों की बात सुनते ही मास्टर जी ने मदारी को 50 रूपये दिए और उससे कहा कि भाई बन्दर के हाथ इन दोनों बच्चों के सिर पर रखवा दो ताकि बच्चे खुश हो सकें।

मदारी पर 50 रुपये के नोट का असर एक दम से हुआ और उतनी ही तीव्रता से मदारी के निर्देशों का असर बन्दर पर हुआ; नतीजन बन्दर ने आशीर्वादों और कलाबाजियों की झड़ी लगा दी। बन्दर के साथ खेलकर मास्टर जी के दोनों बच्चे बेहद खुश हुए।

अपनी छत से मास्टर जी के दोनों बच्चों को बन्दर के साथ खेलता देखकर कलेक्टर साहब के बच्चों ने भी कहा कि पापा, उन्हें भी बंदर के साथ खेलना है। कलेक्टर साहब ने कहा, "अरे तुम दोनों आजकल कैसी-कैसी बातें करने लग गए हो, वो बंदर एक जानवर है, काट लेता है, बंदर भी कोई खेलने वाली चीज है क्या ?" इतना सुनते ही उनके बच्चे बेचारे हर बार की तरह चुपचाप बैठ गए ।

कुछ दिनों बाद एक शाम को कलेक्टर साहब के घर उनके बैच के एक एस. पी. साहब आये हुए थे तो उन्होने कलेक्टर साहब के बच्चों से पूछा कि बेटा तुम दोनों बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं ? इतना सुनते ही दोनों बच्चों ने तपाक से उत्तर दिया - **"मास्टर"।**

विशेष -

जीवन को इतना भी मत बांधों कि डोर ही टूट जाए और इतना भी ढ़ीला मत छोड़ो कि खुद ही इसमे उलझ जाओ।

जीवन की सम्पूर्णता इसके मजे (आनंद) में है और इस मजे के सबके अपने-अपने मायने हैं।

★ ★ ★

रात में एक चोर घर में घुसा...!! (लघु कथा)

कमरे का दरवाजा खोला तो बरामदे पर एक बूढ़ी औरत सो रही थी। खटपट से उसकी आंख खुल गई। उस बूढ़ी औरत ने चोर को देख लिया और चोर ने भी उस बूढ़ी औरत को उसे देखते हुए देख लिया। चोर ने घबरा कर उसे देखा तो वह लेटे-लेटे बोली, "बेटा, तुम देखने से तो किसी अच्छे घर के लगते हो, लगता है किसी परेशानी से मजबूर होकर इस गलत रास्ते पर आ गए हो। चलो .... कोई बात नहीं, अलमारी के तीसरे बक्से में एक तिजोरी है, इसका सारा माल तुम चुपचाप ले जाना। मगर पहले मेरे पास आकर बैठो, मैंने अभी-अभी एक ख्वाब देखा है। वह सुनकर जरा मुझे इसका मतलब तो बता दो।"

चोर उस बूढ़ी औरत की रहमदिली से बड़ा अभिभूत हुआ और चुपचाप उसके पास जाकर बैठ गया।

बुढ़िया ने अपना सपना सुनाना शुरु किया, "बेटा, मैंने देखा कि मैं एक रेगिस्तान में खो गई हूँ। ऐसे में एक चील मेरे पास आई और उसने 3 बार जोर-जोर से बोला - पंकज ! पंक़ज ! पंकज !, बस फिर ख्वाब खत्म हो गया और मेरी आंख खुल गई। जरा बताओ तो इसका क्या मतलब हुआ?"

बुढ़िया का ख्वाब सुनकर चोर सोच में पड़ गया कि भला इसका क्या मतलब हो सकता है।

इतने में बराबर वाले कमरे से बुढ़िया का नौजवान बेटा पंकज अपना नाम ज़ोर-ज़ोर से सुनकर दौड़ा आया और अंदर आते ही सारा माजरा समझ गया और उसने चोर की जमकर धुनाई कर दी।

बुढ़िया बोली, "पंकज बेटा, बस करो, अब यह चोर अपने किए की सजा भुगत चुका।

इतना सुनते ही चोर बोला, "नहीं-नहीं भाईसाब, मुझे और कूटो और कूटो! ताकि मुझे आगे याद रहे कि मैं चोर हूँ, सपनों का सौदागर नहीं।"

★ ★ ★

तुम कब बदलोगे

बोगिरेड्डी श्रीनिवास राव

सालों से तुम्हारी साथी हूँ,
सभी कालों में तुम्हारा रखवाला हूँ,
हमेशा गलतियाँ करते हो तुम,
लेकिन सजा पाता हूँ मैं,
कौन हूँ मैं, क्या है मालूम?
रिश्ते में मैं हूँ तुम्हारा घर,
हाँ मैं हूँ तुम्हारा घर।

हमेशा पराया धन चाहते हो,
अगर कुछ तकलीफ आई तो,
वास्तु के नाम पर दीवार तोड़ते हो,
हमेशा भ्रष्टाचार, मिलावट जैसे,
गैर - कानूनी काम करते हो,
अगर कुछ तकलीफ आई तो,
खिड़कियाँ और दरवाजे तोड़ते हो।

मुझे इतनी बार बदलते हो,
लेकिन तुम कब बदलोगे?
अब तक तो तुम केवल,
नैतिक नियम ही तोड़ते थे,
लेकिन अब तो तुमने प्रकृति के
नियमों को भी तोड़ना शुरू कर दिया।

अगर तुम्हें शादी के लिए
लड़कियाँ नहीं मिलतीं,
तो उनकी संख्या बढ़ाओ,
लेकिन किसी की बीवी को देखकर,
उस पर बुरी नजर मत डालो।

★ ★ ★

देवनाथ मिश्रा (व.लेखापरीक्षक)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) आंध्र प्रदेश

कोरोना-प्रभाव

हाँ, मैं हैदराबाद हूँ।
दौड़ता, भागता दिन-रात,
मैंने नहीं सोची थी यह बात,
कभी मैं भी थकूँगा, रुकूँगा, और फिर कैद हो जाऊगा,
कैद अपने में ही!
सब कैद हैं, नही दिखते अब जद्दोजहद में,
दौड़ता भागता, बेतहाशा हाँफता
अब कोई जल्दी किसी को,

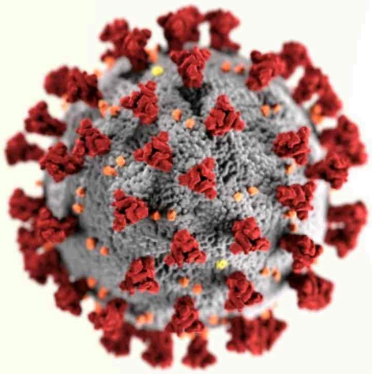

और मैं अब आजाद हूँ।
रेस्त्रा, होटल, सिनेमा सभी नींद के आगोश में हैं,
पगडंडिया सुनसान है,
सन्नाटों को चीरती सिर्फ एंबुलेंस की आवाज है।
विद्यालय, कार्यालय सभी ठहर से गये हैं,
लोग भी घरों में कैद हो गये हैं।
बहुत आवाज थी, बसों, ट्रकों और गाड़ियों से,
मेरा दम घुटता था प्रदूषण की आँधियों से।
मैं इस सबका गवाह था
जब मेरे शहर में धुएँ का प्रवाह था।

मेरे जैसे कई और शहर थे, रोते तड़पते,
दम घुटता था उनका भी,
क्योंकि आदमी ने खोद दिया था, रौंद दिया था,
मैं उजड़ा हुआ शहर, मनुष्यों के लिए बसा हुआ शहर।
मैं बहुत बीमार था,
चिमनियों और गाड़ियों के धुँए से लाचार था।
'ऑड-ईवन' के कहीं झूठे दिलासे
तो कहीं मुझे स्वच्छ करने की फाइली योजनाएँ
दम और घुटते थे जब प्रदूषण पर 'कोर्ट' खुलते थे।

नारी को रोज सुबह से शाम तक की जद्दोजहद,
रसोई घर से लेकर घर का सब प्रबंधन,
पुरूष को भी मिला है, रसोई में झाँकने का अवसर
इसका सच में दिखने लगा है असर।
रूबरू हो सच्चाई से अब वह शांत है
क्योंकि उसे भी अब रसोई का एहसास है।

रिश्ते-नातों से परदे उठे हैं,
ना कोई अस्पताल, ना ही श्मशान जाने को तैयार है,
अपनों का अग्निदान भी अपनों से मोहताज है।
परिवार और रिश्तों की नई परिभाषा गढ़ी है,
जो महसूस हो रही, हर घड़ी है।

आसमान का रंग नीला होता है।
कभी पढ़ा था विज्ञान की किताब में,
ओह! सचमुच नीला है आकाश का रंग।
'ओजोन' भी खुश है,
'ग्लोबल वार्मिंग' बेसुध है,
'मॉंट्रियल प्रोटोकॉल', क्योटो प्रोटोकॉल,
फिर भी नहीं सब संग,
प्रकृति ने खुद को सैनिटाइज कर लिया अपने ढंग।
क्योंकि नहीं है वातावरण अब तंग,
सदियों के बाद बदला है मेरे शहर का रंग।

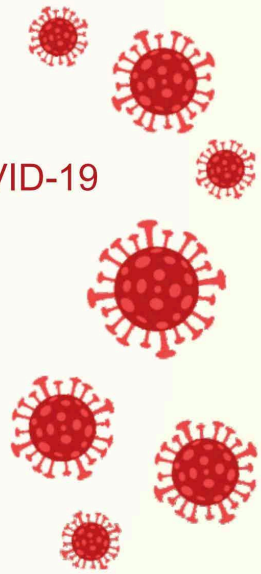

दौड़ अब भी है,
फैक्ट्रियों में नहीं,
अबकी बारी है, खेतों के किसानों की,
एक शहर को बहरे कर देने वाले गाड़ियों के हॉर्न,
नहीं सुनायी देते हैं।
ठिठुर गया है पूरा शहर, अपने मौत के भय से,
बिना किसी नियम कानून व याचिका के,
अब नहीं माँगनी पड़ती है, सुप्रीम कोर्ट को रिपोर्ट
कितना साफ हुआ शहर ?

मनुष्य तोड़ देना चाहता है सभी बंदिशें,
आजाद हो जाना चाहता है,
मगर किससे? प्रकृति के नियमों से?
नहीं! उससे आजादी ही,
तुम्हारे जीवन से आजादी साबित हो जाएगी।
तुम जितने पेड काटोगे, अर्थात्,
ऑक्सीजन में विष घोलोगे,
हर बार तुम्हें बढ़ाना होगा,
अपने अस्पतालों में ऑक्सीजन के सिलेण्डर।
निषिद्ध पशु पक्षियों, चमगादड़ों का भक्षण,
परिणाम! नहीं हो या रहा तुम्हारा रक्षण।

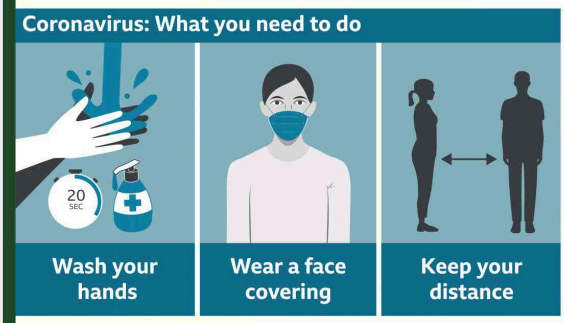

'परमाणु बम' 'हाइड्रोजन बम' 'मिसाइलों' का दम भरने वाले,
बेबस हैं, बीमार है, वो खुद ही लाचार हैं।
कोल्ड ड्रिंक की जगह, अब काढ़ा ने ले लिया है।
यह सब कर दिखाया है,
प्रकृति का एक अदृश्य योद्धा, कोरोना,
अष इसके लिए, क्यों बेकार का रोना,
प्रकृति का नियम – कानून जारी है,
हर बार निगेटिव' नहीं, 'पॉजिटिव' होना भी जरूरी है।
हाँ, यह सही है, सब कुछ तभी ठीक है,
जब 'निगेटिव' आपकी रिपोर्ट है।

★ ★ ★

<u>हँसी-ठिठोली</u>

मेहमान : और बेटा आगे का क्या प्लान है?

पप्पू: अंकल, बस आपके जाते ही बिस्कुट खाऊंगा क्यूँकि नमकीन तो आपने छोड़ी नहीं ..!!!

प्रकाश जीवन गुप्ता
लेखापरीक्षक
कार्यालय प्र.म.ले. (जी. एण्ड एस.एस.ए.)

खुद की खोज

तू खुद की खोज मे निकल
तू किस लिए हताश है
तू चल तेरे वजूद की समय को भी तलाश है।
समय को भी तलाश है।
जो तुझसे लिपटी बेडिया समझ ना इनको वस्त्र तो
जो तुझसे लिपटी बेडिया समझ ना इनको वस्त्र तो

ये बेडिया पिघला के बनाले इनको शस्त्र तो
तू बनाले इनको शस्त्र तो
तू खुद की खोज में निकल
तू किस लिए हताश है
तू चल तेरे वजूद की समय को भी तलाश है
समय को भी तलाश है
चरित्र जब पवित्र है तो क्यों है दशा यह तेरी
चरित्र जब पवित्र है तो क्यों है दशा यह तेरी

ये पापियों को हक नही के ले परीक्षा तेरी
के ले परीक्षा तेरी
तू खुद की खोज में निकल
तू किस लिए हताश है
तू चल तेरे वजूद की समय को भी तलाश है।
समय को भी तलाश है।
जला के भस्म कर उसे जो क्रूरता का जाल है।
जला के भस्म कर उसे जो क्रूरता का जाल है।

तू आरती की लौ नही
तू क्रोध की मशाल है।
तू क्रोध की मशाल है।

तू खुद की खोज में निकल
तू किस लिए हताश है
तू चल तेरे वजूद की समय को भी तलाश है
समय को भी तलाश है।

★ ★ ★

विवेक कुमार सैनी

नहीं जी रहे अगर देश के लिए तो अपराधी हो

चाहे जो हो धर्म तुम्हारा चाहे जो वादी हो
नहीं जी रहे अगर देश के लिए तो अपराधी हो।
जिसके अन्न और पानी का इस काया पर ऋण है
जिस समीर का अतिथि बना यह आवारा जीवन है
जिसकी माटी में खेले, तन दर्पण सा झलका है
उसी देश के लिए तुम्हारा रक्त नहीं छलका है
तारीख के न्यायालय में तुम प्रतिवादी हो
नहीं जी रहे अगर देश के लिए तो अपराधी हो।
जिसके लहराते खेतों की मनहर हरियाली से
रंग-बिरंगे फूल सुसज्जित डाली-डाली से
इस भौतिक दुनिया का भार हृदय से उतरा है
उसी धरा को अगर किसी मनहूस नजर से खतरा है
तो दौलत ने चाहे तुमको हर सुविधा लादी हो
नहीं जी रहे अगर देश के लिए तो अपराधी हो।
अगर देश मर गया तो बोलो जीवित कौन रहेगा?
और रहा भी अगर तो उसको जीवित कौन कहेगा?
माँग रही है कर्ज जवानी सौ-सौ सर कट जाएँ
पर दुश्मन के हाथ न माँ के आँचल तक आ पाएँ
जीवन का है अर्थ तभी तक जब तक आजादी हो
नहीं जी रहे अगर देश के लिए तो अपराधी हो।
चाहे हो दक्षिण के प्रहरी या हिमगिरी वासी हो
चाहे राजा रंगमहल के हो या सन्यासी हो
चाहे शीश तुम्हारा झुकता हो मस्जिद के आगे
चाहे मन्दिर गुरूद्वारे में भक्ति तुम्हारी जागे
भले विचारों में कितना ही अंतर बुनियादी हो
नहीं जी रहे अगर देश के लिए तो अपराधी हो।

★ ★ ★

सोमबीर

भारत महिमा

हिमालय के आँगन में उसे, प्रथम किरणों का दे उपहार
उषा ने हँस अभिनंदन किया और पहनाया हीरक-हार
विमल वाणी ने वीणा ली, कमल कोमल कर में सप्रीत
सप्तस्वर सप्तसिंधु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम-संगीत
बचाकर बीज रूप से सृष्टि, नाव पर झेल प्रलय का शीत
अरुण-केतन लेकर निज हाथ, वरुण-पथ पर हम बढ़े अभीत
धर्म का ले लेकर जो नाम, हुआ करती बलि कर दी बंद
हमीं ने दिया शांति-संदेश, सुखी होते देकर आनंद
विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम
भिक्षु होकर रहते सम्राट, दया दिखलाते घर-घर घूम
किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं
हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आए थे नहीं
चरित थे पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा संपन्न
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न
हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा मे रहती थी टेव
वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान
वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य-संतान
जियें तो सदा इसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।

★ ★ ★

देवनाथ मिश्रा,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) आंध्र प्रदेश

उरी हमला और आतंकवाद

लहूलूहान किया है तुमने, अपने कुटिल इरादों से,
भूल ना जाना तुम इसको, अपने बेशर्मी वादों से।
छदम युद्ध करके तुमने, वीरों का अपमान किया,
इन सोये वीर सपूतों का, कायरतापूर्ण संहार किया।
तुमने वज्र प्रहार किया है, भारत की छाती पर,
अपने गतिविधि को परिणाम समझ, सोये सौंपी थाती पर।
भारत में कर विस्फोटों से, दिल का दर्द बढ़ाया है,
सूख चुके घावों पर, फिर से नमक लगाया है।
उन आँखों की दो बूंदों से सागर भी हारा होगा,
जब मेंहदी वाले हाथों ने मंगलसूत्र उतारा होगा।
सिसक रही हैं माँ की आँखें, विधवा जीवन दान दिया है,
भारत के प्यार के बदलें में यह कैसा ईनाम दिया है।
घर में बैठे हत्यारों को, तुम दंडित करना भूल गये हो,
अपने बच्चों का करूप क्रदंन, भी तुम भूल गये हो।
मानवता के हत्यारों के, कैसे तुम पालनकर्ता हो,
ऐसे खूँखार आंतकियों के, कैसे कर्ता - धर्ता हो।
मानव होकर मानवता के, सोपानों को तुम भूल गये,
लश्कर जमात को ले आगोश में, आदर्शों को तुम भूल गये।
युद्ध नियम कहता है, योद्धाओं का सम्मान करो,
निहत्थे वीर सपूतों को, कभी ना लहूलुहान करो।
राष्ट्र संघ के मंच पर, लोगों को गुमराह किया,
जब मीठी शरीफ बोली से, गीत सुना बहला दिया।
ओसामा की रहनुमाई करके, पूरे जग में कुख्यात हुए,
तुम्हारी नीयत और आदर्शों को, बहुत लोग पहचान गए।
इस धरती को तुमने ही गुनाहो से, नरक बनाया है,
इसीलिए तो जन्नत का तुमने, दिव स्वप्न दिखलाया है।
यह धरती है स्वर्ग सी प्यारी, इसका तुम एहसास करो,
बम-बारूदों और गोलों से नही, फूलों से इसको आबाद करो।
करता है यह देश नमन, वीरों सौ बार तुम्हें,
मर कर अभिलाषाओं की, दे गये सौगात हमें।

★ ★ ★

पी.एल.एन. शर्मा,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरी कविता

है दुनिया हमारा, किधर जाना चाहता है बेचारा,
जो दिया खुदा हाथ में, उसी में, बदलो किस्मत बाद मैं

तात्पर्यः हम इस दुनिया में जब से आये हैं, बिचारे हमें इतना भी नहीं मालूम कि हमे करना क्या है? पर एक वो जो आया है, बिल्कुल हमारें जैसा, उसने बदल डाली किस्मत सबकी।

दुनिया कभी नहीं बदलती,
उस पर शिकायत करना ही मूर्खता की निशानी,
अकल्मन्द पहले ही बदल देता अपनी पेशानी,
वही दूर करेगा सारी दुनिया की परेशानी

तात्पर्यः दुनिया तो ऐसे की वैसी ही है, और इसकी शिकायत किसे करें? वह जो अकल्मन्द जो आया है, वह तो पहले अपने नसीब की लकीर को लिख।

आये हैं इस दुनिया में एक ही जैसे
अपने अपने कर्म से बन गए ऐसे वैसे
सुधरने वाला ध्यान से ही सुधरेगा

तात्पर्यः हम सब इस दुनिया मैं एक ही जैसे आये है, परन्तु अपने कर्मों से विभिन्न बन गए है,मगर अकल्मन्द तो ध्यान शक्ति से ही अपने आप को अपने चाहत के अनुसार सुधार लेगा।

मुस्कान का वर देते हो तो
चिता से उठकर बाहर आऊँगा
वजन दोगे तो अगले जन्म भी साथ निभाउँगा

तात्पर्यः इस stress भरी दुनिया में एक मुस्कान का ही वरदान चाहिए, प्रिये से अगर वह मिल गया तो अगर चिता में भी है तो उठना मुश्किल नहीं, अगर वजन ही मिल गया तो अगले जन्म में भी साथ निभाने में कोई एतराज नहीं हैं।

★ ★ ★

सोनाली कुमारी
(एफ.ए.डब्ल्यू-।।)
(जी. एण्ड एस.एस.के.) आ.प्र.

माँ मै दूर हूँ

माँ मै दूर हूँ
पर मजबूर हूँ
ये दूरी घट नही सकती
और मजबूरी मिट नहीं सकती,
माँ मै दूर हूँ
पर मजबूर हूँ।
संघर्ष है जीवन में,
और तड़प भी,
पर मजबूरी, इनको भी रूलाती है
माँ की जब याद आती है।
फिर भी मैं मजबूत हूँ।
माँ मै तुमसे दूर हूँ।
ये एहसास मुझे रूलाता है।

माँ मै दूर हूँ
पर मजबूर हूँ

★ ★ ★

हँसी-ठिठोली

लड़का – मैं तुम्हारे साथ शादी नहीं कर सकता। मेरे वाले नहीं मान रहे हैं।
लड़की – तुम्हारे घर मैं कौन-कौन है?
लड़का – एक पत्नी और दो बच्चे।

आरती

कितने दूर, कितने पास?

अजान की आवाज से रोज की तरह तड़के ही आँख खुल गई। अधखुली आँखों से आजकल की परंपरा के चलते सबसे पहले मोबाइल में उलझ गई। लगभग 15 मिनट तक मोबाइल की हर ऐप्प टटोलने के बाद ईश्वर का ध्यान किया। नित्य की तरह आज भी प्रण किया कि "कुछ भी हो जाए, आज फिर उसे खोज कर रहूंगी।"

उसे खोजने की प्रक्रिया आज की नहीं है, कॉलेज के समय से ही यह आदत-सी बन गई है। कभी-कभी दूर से ही उसकी झलक मिलती रही है, लेकिन जितना देखती हूँ उतनी ही उसकी ललक बढ़ती जाती है। जिस पल उस पर नजर पड़ती है दिल में अथाह सुकून मिलता है। कॉलोनी से बाहर निकल कर ऑटो लिया, ऑटो में चार और भी लोग साथ थे। मैंने गौर से एक-एक का चेहरा टटोला, लेकिन निराशा ही हाथ लगी। ऑटो से उतर कर मेट्रो स्टेशन तक पहुँची। स्टेशन की लिफ्ट में भी आठ-नौ लोग मेरे साथ थे। मैंने फिर प्रयास किया कि शायद मुझे वह मिल जाए।

लिफ्ट से निकल कर मेट्रो में प्रवेश करने तक मेरा पूरा ध्यान उसे खोजने पर था, आखिर सुबह उठते ही प्रण जो लिया था। मेट्रो के अंदर बहुत भीड़ थी पर यह भीड़ उसे खोजने में मददगार थी। जितने अधिक लोग उसे खोजने की उतनी ही अधिक संभावना, लेकिन हुआ उसका ठीक उलट। यहाँ तो परिस्थिति और भी खराब थी।

मेरे कॉलेज के दिनों में बसों का चलन अधिक था, मोबाइल तो केवल बड़े लोगों के हाथ में हुआ करते थे; बड़े अर्थात उम्र से भी और अर्थ से भी। उस समय बस यात्रियों की आपस में मैत्री होने में देर नहीं लगती थी। दो से तीन बार एक ही बस में साथ सफर किया, बस बन गए दोस्त। परिवार से लेकर व्यवसाय तक सभी प्रकार के इधर-उधर के विषयों में गूढ़ चर्चा शुरू।

जैसे-जैसे तकनीकी विकास हुआ, दूर-दराज के लोग पास आ गए और निकट बैठने वाले अंजान हो गए। मेट्रो में सबके हाथों में मोबाईल हैं और कानों में ईयर-फोन इस प्रकार ठूस रखा है कि मेट्रो की घोषणा भी सुनाई न पड़े। मैंने चारों तरफ उसे खोजा पर असफल रही। मिला क्या? सबके नीरस चेहरे, रूखी आँखें और मोबाईल से उम्मीदें। रोजाना की तरह दीवारों और इंसानों में ज्यादा अंतर नहीं जान पड़ रहा था।

फिर मेरे कानों में 'उसकी' खनक सुनाई पड़ी। जिसे मेरी आँखें खोज रहीं थी, मेरे कानों ने उसे पहचान लिया। मैंने उसकी तरफ देखा और बिना पलक झपकाए देर तक निहारती रही। एक दो से तीन वर्ष की प्यारी सी बच्ची के चेहरे पर 'वह' ऐसी खिल रही थी जैसे कि पहाड़ों की चोटियों पर बर्फ। जब-जब वह बच्ची खिलखिलाती 'वह' बर्फ पर पड़ी सूर्य की किरणों सी चमक जाती। मैं उसे जितना निहार रही थी, मन के इंद्रधनुष में रंग उतने ही उभरते जा रहे थे।

जी हाँ, मैंने उसे खोज लिया। हमारे जीवन को सरस बनाने वाली 'मुस्कान'। मैंने सोचा कि विलुप्त होती 'मुस्कान' आज कैसे मिल गई। गौर किया कि बच्ची के पास न तो मोबाईल था और न ही अपने-पराये का भेद करने की भावना। आज मुझे सफलता मिल गई। कल सुबह फिर खोजूंगी 'मुस्कान'।

★ ★ ★

सागर शर्मा,
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक,
कार्यालय प्र.म.ले. (लेखापरीक्षा)आंध्रप्रदेश, हैदराबाद

तिमाही प्रगति रिपोर्ट प्रपत्र में आंकड़े भरने की विधि

राजभाषा संबंधी संवैधानिक और कानूनी उपबंधों का अनुपालन सुनिश्चित करने और संघ के सरकारी काम-काज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए गृह मंत्रालय के एक स्वतंत्र विभाग के रूप में जून, 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई थी। राजभाषा विभाग द्वारा सरकारी कार्यालयों में हिन्दी में किए जाने वाले कार्यों के संबंध में कुछ लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं तथा प्रत्येक कार्यालय का दायित्व है कि इन लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए। इन प्राप्त किए गए लक्ष्यों का विवरण तिमाही प्रगति रिपोर्ट प्रपत्र में भर कर हिन्दी अनुभाग को भेजा जाता है तथा बाद में ये आंकड़े मुख्यालय को भी भेजे जाते हैं। अतः मैंने इस सारणी के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि तिमाही प्रगति रिपोर्ट प्रपत्र में आंकड़ों को कैसे भरा जाए।

क्र.सं	नियम	दस्तावेज़	निर्धारित लक्ष्य
1	राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3)	इनमें सामान्य आदेश, ज्ञापन, संकल्प, अधिसूचनाएं, नियम, करार, संविदा, टेंडर, नोटिस, संसदीय प्रश्न आदि शामिल हैं। इनको द्विभाषी रूप में जारी करना अनिवार्य है।	**100%**
2	राजभाषा अधिनियम 1976 का नियम-5	केंद्रीय सरकार के किसी भी कार्यालय से हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में ही दिया जाना चाहिए।	**100%**
3	केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच क्षेत्रवार पत्राचार (क-ख-ग क्षेत्र)	अनुभागों द्वारा क-ख-ग क्षेत्रों को भेजे जाने वाले पत्रों को हिन्दी/द्विभाषी रूप में भेजा जाना चाहिए। ("ग" क्षेत्र में स्थित राज्य सरकार के कार्यालयों/व्यक्तियों को जारी किए गए पत्रों को शामिल ना किया जाए)	**55%**
4	फाइलों पर हिंदी में कार्य (टिप्पणियाँ)	फाइलों पर लिखी गयी टिप्पणियों को हिन्दी में लिखा जाना चाहिए।	**30%**

★ ★ ★

नामः गौरव कुमार
पदनामः डी.ई.ओ.
कार्यालय प्र.म.ले. (जी. एण्ड एस.एस.ए.)

कविता

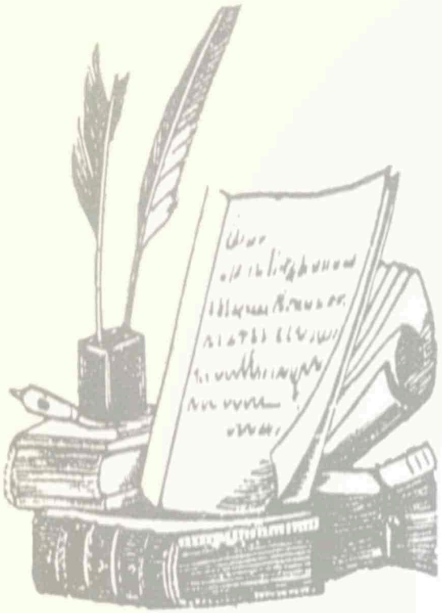

धरा हिली, गगन गुंजा,
नदी बही, पवन चला,
विजय तेरी, हो जय तेरी,
ज्योत सी जला जला

भुजा भुजा फड़क फड़क
रक्त मे धधक-धधक
धनुष उठा प्रहार कर
तू सबसे पहले वार कर

अग्नि सी धधक धधक
हिरण सी सजग सजग
सिंह सी दहाड कर
शंख सी पुकार कर

रूके ना तू थके ना तू
झुके ना तू थमे ना तू
धनुष उठा प्रहार कर
तू सबसे पहले वार कर

हुआ आज आंतकी हमला
फिर देश एक बार रोया है
भारत माँ ने अपने 17 बेटों को एक बार मे खोया है
आँखें खोलो अब तो जागो राजनीति के ठेकेदारों
सरहद पार करो हर एक आतंकी को चुन-चुन कर मारो।

★ ★ ★

ज्योति दीक्षित

माँ मैं तो तेरी परछाई हूँ

तू कितनी खूबसूरत है माँ, तू ममता की सूरत है माँ,
तुझसे ही है अस्तित्व मेरा, तू ही मेरा सब कुछ है माँ,
बस यही बताने आई हूँ, माँ मैं तो तेरी परछाई हूँ।

क्यों दुनियाँ से डरती हो माँ, क्यों छुप-छुप कर रोती हो माँ,
तुम भी तो एक स्त्री हो माँ, तुम भी तो एक शक्ति हो माँ,
बस यह याद दिलाने आई हूँ, माँ मैं तो तेरी परछाई हूँ।

यदि भाई तेरा वंश है माँ, तो मैं भी तेरा अंश हूँ माँ,
यदि वो कुल का दीपक है तो, मैं भी इस घर की ज्योति हूँ माँ,
बस यह एहसास दिलाने आई हूँ, माँ मैं तो तेरी परछाई हूँ।

तेरी बगिया का फूल बन जाऊँगी, तेरा घर आँगन महकाऊँगी,
तेरी अलग पहचान बनाऊँगी, तुझे तेरा हक दिलाऊँगी,
मैं बिलकुल नहीं पराई हूँ, माँ मैं तो तेरी परछाई हूँ।

तुझे किस बात का डर है माँ, एक बार तो कर विश्वास माँ,
तू ही मुझे बचा सकती है, इस दुनियाँ में ला सकती है,
बस यह विनती करने आई हूँ, माँ मैं तो तेरी परछाई हूँ।

मुझे भी इस दुनियाँ में आना है, कुछ बनकर भी दिखाना है,
इस दुनियाँ का भ्रम भी मिटाना है, तुझे भी सम्मान दिलाना है,
मैं तो खुशियाँ लेकर आई हूँ, माँ मैं तो तेरी परछाई हूँ।

(माँ का जवाब)

अब है ये दृढ़ संकल्प मेरा, तुझको दुनियाँ में लाऊँगी,
बेटी अब तेरी खातिर तो, इस दुनियाँ से लड़ जाऊँगी,
तेरे लिए ढाल बन जाऊँगी, हर किसी को यह समझाऊँगी,
कि बेटी नहीं पराई है, वो तो मेरी परछाई है।

★ ★ ★

ए. प्रशान्ता कुमारी
स.ले.अ.

कामयाबी का रहस्य

एक बार की बात है एक छोटा बच्चा स्कूल से घर लौटा और अपनी माँ से बोला "माँ, आज टीचर ने मुझे ये चिट्ठी दी है और कहा है कि इसे अपनी माँ को देना।" माँ ने जब वो चिट्ठी पढ़ी तो उनकी आँखों में आँसू आ गए। माँ ने बच्चे को गले लगा लिया, बच्चे को बड़ी हैरानी हुई तो बच्चे ने पूछा कि चिट्ठी में क्या लिखा है? माँ ने कहा "तुम्हारी टीचर ने लिखा है कि आपका बच्चा बेहद प्रतिभाशाली, बुद्धिमान एवं दूरदर्शी है तथा दूसरे बच्चों से बहुत जल्दी सीख लेता है और हमारे स्कूल के टीचर उसे पढ़ाने में सक्षम नहीं है इसलिए आप उसे घर पर ही पढ़ाएँ, स्कूल न भेजें"।

उस दिन से माँ ने बच्चे का स्कूल जाना बंद कर दिया और उसे घर पर ही पढ़ाने लगी। देखते ही देखते कई साल गुजर गए और बच्चे की तालीम पूरी हुई तो उसने घर पर ही छोटे-छोटे प्रयोग करने शुरू कर दिये। कुछ में वो नाकाम रहा लेकिन कुछ इतने सफल थे कि दुनियाँ भर ने उसकी कामयाबी का लोहा माना और बेहद कामयाब वैज्ञानिक के रूप में उसकी पहचान हुई।

एक दिन इस शख्श ने 1093 पेटेंट अपने नाम कराने का विश्व रिकॉर्ड बनाया। इस शख्श का नाम था - थॉमस एल्वा एडिसन।

एक रोज अपनी माँ की मौत के बाद एडिशन अपनी माँ की पुरानी चीजें देख रहा था तो उनमें उसे एक चिट्ठी मिली, उसने उसे उलट-पुलट कर देखा तो उसे लगा कि यह वही चिट्ठी है जो बचपन में टीचर ने उसे दी थी। फिर जब उसने चिट्ठी पढ़ी तो उसमें लिखा था "आपका बच्चा मंदबुद्धि, बेवकूफ और मूर्ख है, दूसरे बच्चों से बहुत पीछे है, उसके समझने-सीखने की क्षमता दूसरों से बहुत कम है, उसे कितना भी सिखाएँ पर उसे समझ नहीं आता, अतः हमारे टीचर उसे पढ़ने में सक्षम नहीं हैं। इसलिए आप उसे स्कूल ना भेजें।" चिट्ठी पढ़कर एडिशन जज्बाती हो गया और अपनी माँ को याद करने लगा कि कैसे उसने एक मंदबुद्धि बच्चे को एक कामयाब वैज्ञानिक बनाया।

देखिये सारा कमाल इंसान की जहनियत का है, एडिसन की माँ की सकारात्मक सोच ने एक कमजोर बच्चे को वैज्ञानिक के मुकाम तक पहुंचाया।

★ ★ ★

प्रकाश जीवन गुप्ता
लेखापरीक्षक
कार्यालय प्र.म.ले. (जी. एण्ड एस.एस.ए.)

हिन्दी

निज रूप विशाल दिखाती है, वह भारत की तस्वीर है हिंदी,
तुलसी, रसजान कबीर, पिए, वह धेनु का पावन क्षीर है हिंदी,

देश को प्रेम से बांध रही, वह एकता की जंजीर है हिंदी,
मीरा का पावन गीत, वही खुसरो की पहेली हिंदी कबीर है

बच्चन के मन की मदिरा, महादेवी का अमृतधार है हिंदी,
कही पंत की कोमल भावना, कही संत निराला का प्यार है हिंदी,

गुप्त प्रसाद ने पूजा जिसे वह टंडन जी का विचार है हिंदी
ध्यान से कान लगा के सुनो, इस देश की एक पुकार है हिंदी,

विदेशी भाषाएं जो थोप रहे उनसे सद्भाव की आशा न होगी,
दिनकर भारतेन्दु के वारिस है हमसे कभी कोई निराशा न होगी,

भाषा के नाम पर देश बटे ऐसी तो कभी अभिलाषा न होगी,
स्वागत है सबका घर में पर राष्ट्र की दूसरी भाषा न होगी।

आप सभी भारतीयों व भारतवंशियों को पूर्ण वैज्ञानिक प्राचीन विश्व में पांचवें क्रम पर सर्वाधिक बोली जानी वाली भाषा, हमारी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा हिंदी के उन्नयन, संवर्धन हेतु सुनिश्चित हिन्दी दिवस (14 सितंबर) की हृदय की अतल गहराई से अनंत कोटि की शुभकामनाएं व बधाई।

★ ★ ★

सुविचार

"अगर कोई आप पर आँख बंद करके भरोसा करे; तो आप उसे एहसास मत दिलाओ कि वह सचमुच अँधा है।"

- रितु सिंह

साहस - एक सोच

6 साल पहले, मेरा सबसे बड़ा बेटा घर से गायब हो गया, वह हमेशा की तरह काम पर निकला लेकिन कभी वापस नहीं लौटा। एक हफ्ते बाद, लोगों को उसकी लाश एक ऑटो में मिली। वो सिर्फ 40 साल का था। मेरे साथ उसका एक हिस्सा मर गया, लेकिन जिम्मेदारियों के बोझ ने मुझे सही से दुःख मनाने का समय भी नहीं दिया – अगले ही दिन, मैं सड़क पर था। अपनी ऑटो चला रहा था पेट भरने के लिए।

लेकिन 2 साल बाद, दुःख ने फिर से मेरा दरवाज़ा खटखटाया - मैंने अपने दूसरे बेटे को भी खो दिया। गाड़ी चलाते समय, मुझे एक कॉल आई- "आपके बेटे की लाश प्लेटफॉर्म नंबर 4 पर मिली है। उसने आत्महत्या कर ली है।" मेरी बहू और उनके 4 बच्चों की ज़िम्मेदारी ने मुझे जिन्दा रखा। दाह संस्कार के बाद, मेरी पोती, जो 9 वीं कक्षा में थी, उसने मुझसे पूछा, "दादाजी, क्या अब मेरा स्कूल छूट जायेगा?"

मैंने अपनी सारी हिम्मत जुटाई और उससे कहा, "कभी नहीं। तुम जितनी चाहो उतनी पढाई करना।" मैं पहले से ज़्यादा समय तक ऑटो चलाने लगा। मैं सुबह 6 बजे घर से निकलता और आधी रात तक अपना ऑटो चलाता। इतना करने के बाद भी मैं हर महीने बस दस हज़ार रुपये कमा पाता। उनके स्कूल की फीस और स्टेशनरी पर 6,000 रुपये खर्च करने के बाद, मुझे 7 लोगों के परिवार को खिलाने के लिए मुश्किल से 4,000 रुपये ही बचते।

अधिकांश दिनों में, हमारे पास खाने के लिए मुश्किल से ही कुछ होता है। एक बार, जब मेरी पत्नी बीमार हो गई, तो मुझे उसकी दवाएँ खरीदने के लिए घर-घर जाकर गुहार लगानी पड़ी या सच कहूँ तो भीख माँगनी पड़ी।

लेकिन पिछले साल जब मेरी पोती ने मुझे बताया कि उसकी 12 वीं बोर्ड में 80% अंक आए हैं, तो मुझे लगा मैं अपना ऑटो आसमान में उड़ा रहा हूँ। मैंने पूरे दिन अपने सभी कस्टमर को मुफ्त सवारी दी। पोती ने मुझसे कहा,"दादाजी, मैं दिल्ली में बी.एड. कोर्स करना चाहती हूँ।"

उसे दूसरे शहर में पढ़ाना मेरी औकात से बाहर था, लेकिन मुझे किसी भी कीमत पर उसके सपने पूरे करने थे; इसलिए, मैंने अपना घर बेच दिया और उसकी फीस चुकाई। फिर, मैंने अपनी पत्नी और बहू को हमारे गाँव में अपने पुस्तैनी घर भेज दिया और मैं मुंबई में बिना छत के रहने लगा - अपनी आटो में।

अब एक साल हो गया है और सही कहूँ तो ज़िन्दगी से कोई शिकायत नहीं है। अब ऑटो ही मेरा घर है। मैं अपने ऑटो में ही खाता और सोता हूं और दिनभर लोगों को उनकी मंजिल तक ले जाता हूँ। बस कभी-कभी दिन भर ऑटो चलाते हुए पैरों में दर्द होता है लेकिन जब मेरी पोती फोन करके कहती है कि वो उसकी क्लास टेस्ट में फर्स्ट आई है तो मेरा सारा दर्द गायब हो जाता है।

मुझे उस दिन का बेसब्री से इंतज़ार है जिस दिन वो टीचर बनेगी और मैं उसे गले लगाकर बोल सकूँगा कि मुझे उस पर कितना गर्व है। मैनें अभी से डिसाइड कर लिया है कि चूँकि वो हमारे परिवार की पहली ग्रेजुएट होने जा रही है तो जैसे ही उसका टीचर बनने का रिजल्ट आएगा तो मैं पूरे हफ्ते किसी भी कस्टमर से पैसे नहीं लूँगा।

विशेष -
इस खुद्दार आटो ड्राइवर का नाम देशराज है और ये मुम्बई में खारडंडा नाका पर मिल जायेंगे इनकी गाडी नंबर 160 के साथ और गजब के साहस और हौसलें के साथ। इनका आर्टिकल Humans of Bombay पर भी आया था। ऐसे लोग ये सोचने पर मजबूर करते हैं कि ज़िन्दगी चाहे कितने भी शिकायत के मौके दे, हमें कभी उम्मीद का हाथ नहीं छोड़ना चाहिए। ये उम्मीद ही इस दुनिया को रहने लायक बनाती है।

★ ★ ★

कार्यालय के वरिष्ठ लेखा अधिकारियों और सहायक लेखा अधिकारियों के लिये आयोजित हिन्दी कार्यशाला का दृश्य।

कार्यालय परिसर में आयोजित स्वतंत्रता समारोह और गणतंत्र दिवस समारोह के दृश्य।

कार्यालय परिसर में आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं और पाठयक्रम परीक्षाओं के दृश्य।

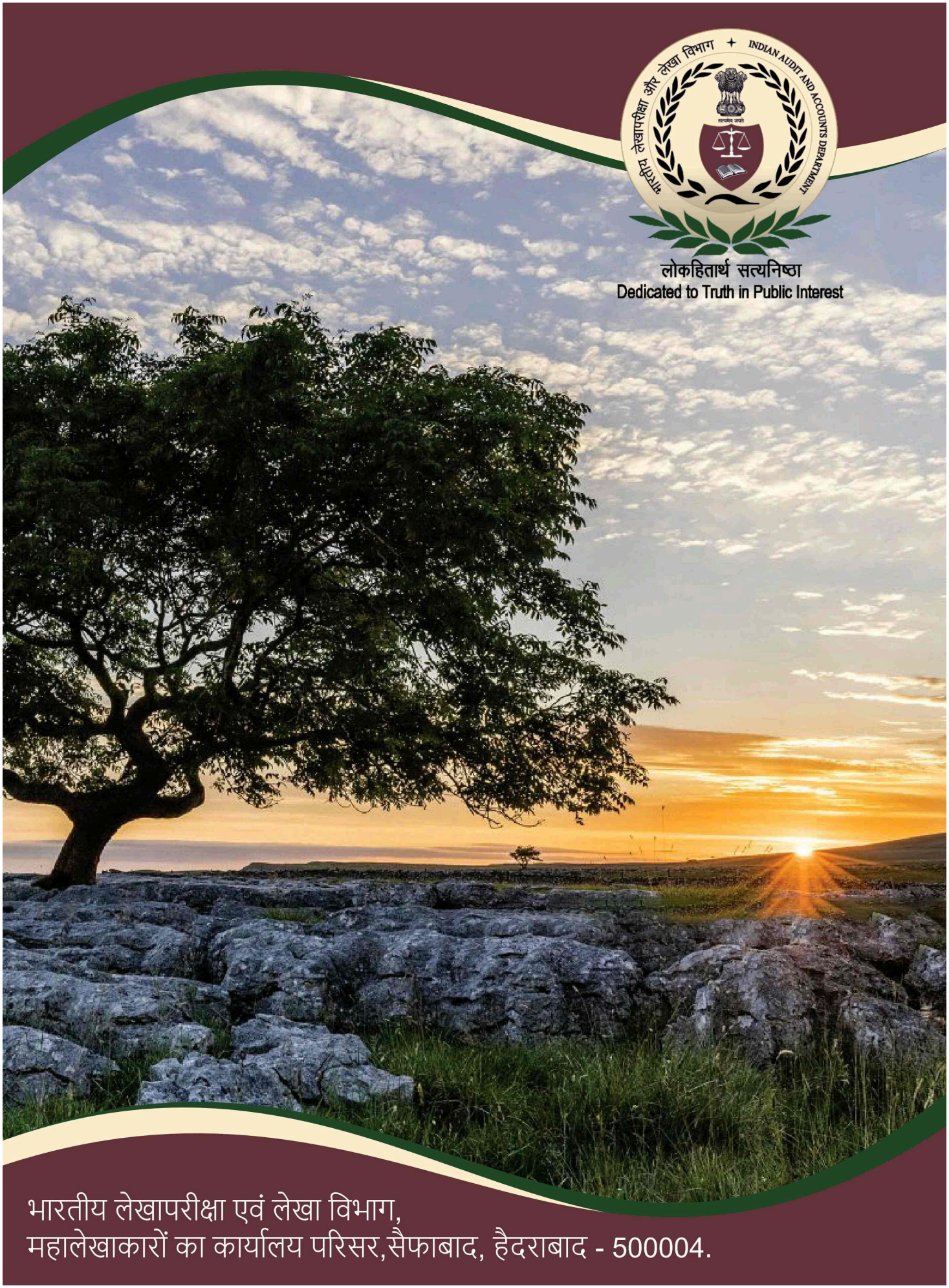

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग,
महालेखाकारों का कार्यालय परिसर,सैफाबाद, हैदराबाद - 500004.